शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 1 | अंक 22 | उदयपुर गुरूवार 01 दिसम्बर 2016 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

उदयपुर का लेक पेलेस विश्व प्रसिद्ध होटलों का 'ताज'

उदयपुर। झीलों की नगरी की शान कही जाने वाली दुनिया की टॉप 100 होटलों में से एक ताज लेक पैलेस को विश्वविख्यात इंटरनेशनल मैगजीन कोंडेनास्ट ट्रेवलर ने एशिया की टॉप 20 होटल्स में से पहले स्थान का अवार्ड दिया है।

युके से प्रकाशित होने वाली मशहूर मैगजीन कोंडेनास्ट ट्रेवलर ने एशिया की टॉप होटल की रैंकिग की जिसमें भारत की उदयपुर स्थित ताज लेक पैलेस होटल को पहला स्थान मिला है। विश्व के टॉप 20 डेस्टिनेशन्स में भी इसे स्थान दिया है।

ताज लेक पैलेस के रेवेन्यू डायरेक्टर भरत व्यास ने बताया कि ताज लेक पैलेस को पहला स्थान मिलने के पीछे होटल में मिलने वाली मेहमानों को सुविधाएं, यहाँ की लोकेशन और हेरिटेज है। इस होटल ने एशिया भर की पांच सितारा होटलों के मुकाबले 92.64 के स्कोर के साथ पहला स्थान प्राप्त किया है। ट्रेवलर मैगजीन के मुताबिक लेक पैलेस की लोकेशन एशिया में सबसे खूबसूरत लोकेशन है, जो पीछोला झील तथा उसके चारों फैली पहाड़ियों का स्वर्गीय सौंदर्य लिए है।

ओढ़नियों में प्रियजनों के नाम ओढ़ती आदिवासी युवतियां

-डॉ. तुक्तक भानावत-

मोबाईल क्रांति ने देश के कोने-कोने में ही नहीं, दूर-सुदूर के मुश्किल से पहुंच देते आदिवासी क्षेत्रों तक को अनोखे रूप में प्रभावित किया है। जहां शिक्षा के प्रचार-प्रसार का उजास नहीं हुआ है वहां भी अक्षर ज्ञान की जगह मोबाईल के अंक-ज्ञान की दुंदुभी सुनाई दे रही है।

उदयपुर से 80 किलोमीटर दूर आदिवासियों के कोटड़ा क्षेत्र के ठेठ गांवों में सभी युवतियों के पास अभी तक मोबाईल की दस्तक तो सुलभ नहीं हुई है किंतु उनकी ओढ़नियों के पल्लू पर अपने प्रियजनों के मोबाईल नम्बरों की कशीदाकारी अवश्य कढ़ी हुई मिलेगी। कोटड़ा के तेजा का वास गांव में महिलाओं की सभी ओढ़नियों पर ऐसे नम्बर देखकर सहसा ही चकित हुए बिना नहीं रहा जा सकता।

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सविता गरासिया ने बताया कि प्रियजनों के नामों में अधिकांश तो घर के मुखिया का नाम ही मिलेगा। जो बालाएं शादीशुदा हैं उनके पतियों के नाम बड़े करीने से कढ़ाई किये मिलते हैं। हूगरी बाई की ओढ़नी पर चार-पांच नाम देखने को मिले। पूछने पर लम्बी मुस्कान छोड़ती बोली कि वे मेरी खास सहेलियों के नम्बर हैं जिनसे दिन में एक बार तो हलो-हाउ कर ही लेती हूं।

ग्राम सरपंच अणन्दाराम गरासिया ने बताया कि जिनके पास मोबाईल नहीं है वे उनके नम्बर तो याद नहीं रख सकती, ऐसे में जिनसे बात करनी होती है वे ये नम्बर दिखाकर आसानी से बात कर लेती हैं।

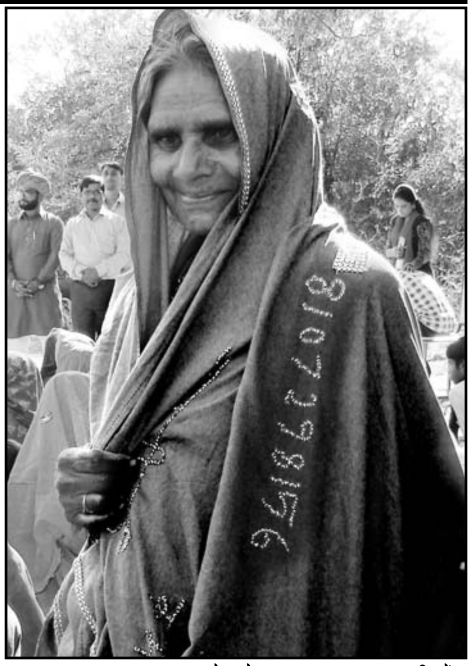

अणन्दाराम ने बताया कि तेजा का वास में कुल जनसंख्या 7500 है। इनमें महिला-युवतियों की संख्या करीब 4000 हैं जिनमें से लगभग 20 प्रतिशत महिलाओं के पास मोबाईल हैं। शेष बिना मोबाईल वाली हैं। इनमें जिनके पास मोबाईल हैं वे भी अपनी ओढ़नी पर मोबाईल नम्बरों की कढ़ाई कराकर बतौर फैशन खुशहाल रहती हैं। एक जगह पांच युवतियों का समूह मिला। उनसे जब पूछा गया कि पल्लू पर कढ़े नामों में क्या प्रेमीजनों के नाम भी होते हैं। इस पर सभी खिलखिलाकर एक-दूसरे को देखने लगीं और वहां से भागती बनीं।

लिव इन रिलेशनशिप में संभावना की तलाश

-मनमोहन बागड़ी-

महानगरों तथा बड़े शहरों में अस्थाई रूप से रहने वाले कुछ लोग जो शादीशुदा हैं, वे पति-पत्नी एक फ्लैट किराये पर लेते हैं। जो अकेले हैं वे दो या तीन व्यक्ति मिलकर रह लेते हैं। कुछ लोग पेइंग गेस्ट के रूप में एक कमरे में दो या तीन मिलकर साथ रहते हैं। इनमें अधिकांश विद्यार्थी होते हैं या कुछ लोग ट्रेनिंग के लिए या टेम्परेरी पोस्टिंग के कारण इन शहरों में अस्थाई रूप से रहने वाले अकेले होते हुए भी साथ-साथ रहते हैं। विपरीत सेक्स के लोगों के साथ रहने को लिव इन रिलेशनशिप की संज्ञा दी जाती है।

इसमें बिना शादी किये लड़का-लड़की, पुरूष-स्त्री एक साथ रहने का निर्णय लेते हैं। ऐसे लोगों की मान्यता है कि महंगाई के कारण बड़े शहरों में वे अकेले फाइनेंशियल बोझ उठाने में असमर्थ होते हैं जबकि लिव इन में फाइनेंशियल व अन्य जिम्मेदारियों की साझेदारी रहती है। कॉलेज अथवा ऑफिस में वे एक-दूसरे को समझे हुए रहते हैं। एक-दूसरे के प्रति आकर्षित हुए रहते हैं। एक-दूसरे के साथ पूरी जिन्दगी बिताने का वादा किये रहते हैं। इनका मानना है कि वे दूध पीते बच्चे तो हैं नहीं कि आगे-पीछे की कोई सोच नहीं रखते। उनकी सोच है कि स्त्री-पुरूष के साथ रहने पर सेक्स का होना तो स्वाभाविक है जिसे सामान्य रूप से लिया जाना चाहिये। जो प्रेमी युवक-युवतियां स्वतंत्र ख्याल के होते हैं और आत्मनिर्भर होते हैं वे इस तरह के रिलेशनशिप में अधिक यकीन रखते हैं।

उनका मानना है कि जब उनमें प्यार है तो उसके लिए विवाह जैसे बंधन की क्या आवश्यकता है। वास्तव में देखा जाय तो लिव इन रिलेशनशिप का पीरियड प्यार की गहराई पर निर्भर करता है। इसमें विवाह के अतिरिक्त सभी कुछ विवाहित जीवन जैसा रहता है। साथ-साथ रहना, खाना, सोना, सेक्स, प्यार, लड़ना-झगड़ना आदि पर विवाह जैसा कानूनी बंधन नहीं होता। अलग या आजाद होने के लिए तलाक लेने की आवश्यकता नहीं रहती। जब तक साथ अच्छा लगता है, खुशी के साथ रहो। जिस दिन यह रिश्ता बोझ लगने लगे, अलग रहने लगो।

हमारी कानून व्यवस्था ने भी लिव इन रिलेशन को मान्यता दे रखी है। इन पंक्तियों के लेखक को एकबार एक अमेरिकी युगल का वास्ता पड़ा। यह युगल शादीशुदा नहीं था और भारत भ्रमण के लिए आया हुआ था। उन दोनों ने विज्ञापन दिया था कि भारत भ्रमण के लिए एक साथी चाहिये, विपरीत सेक्स का होये तो अच्छा। ऐसे विदेशी जोड़े यहां अमूमन देखे जा सकते हैं।

उन दोनों ने यह भी बताया कि जब वे इच्छुक होते हैं तो सेक्स भी कर लेते हैं। विदेशों में बिना शादी किये साथ में रहना सामान्य बात होती है और जब स्त्री प्रेग्नेंट हो जाती है तो शादी कर लेते हैं ताकि बच्चे के कारण कोई लीगल प्रॉब्लम नहीं हो। विदेशों में तलाक लेना और देना सामान्य सी बात है। औसतन हर स्त्री-पुरूष दो-दो, तीन-तीन शादियां किये हुए होते हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप भी 2-3 शादियां किये हुए हैं।

विदेशों में तो युवक-युवतियां बिना शादी किये ही साथ-साथ रहना शुरू करते हैं। वहां लिव इन सिस्टम कॉमन है। बिना कुछ साल साथ में रहे शादी के बारे में कोई सोचता तक नहीं। भारत की स्थिति बिल्कुल अलग है। यहां पर यदि कोई स्त्री बिना शादी किये प्रेग्नेंट हो जाती है तो मुश्किलों का अम्बार लग जाता है। उसका वैवाहिक सम्बंध होना सामान्यतया असंभव हो जाता है। लड़की आत्महत्या करने तक को मजबूर हो जाती है। ऐसे किस्से प्रतिदिन अखबारों में पढ़े जा सकते हैं। ऐसी स्थिति में प्राय: लड़के शादी के लिए मुकर जाते हैं। फिर यह साबित होने पर कि उसके अफेयर के कारण ही लड़की प्रेग्नेंट हुई है तो सामाजिक दबाव के कारण वह शादी करने की स्वीकृति दे देता है।

एक परिस्थिति यह भी बनती है कि यदि दोनों का आपसी प्यार गहरा है तो युवक अपने होने वाले बच्चे की जिम्मेदारी उठाने को तैयार हो जाता है और यह रिलेशनशिप शादी में तब्दील हो जाती है। इस बारे में हाल ही में आया कोर्ट का निर्णय भी बहुत महत्व का है जिसमें युवक पर विवाहित होने जैसी जिम्मेदारी उठाने का निर्णय दिया है और उस पर बच्चे के पालन-पोषण के लिए आर्थिक बोझ भी डाला गया है। दूसरे शब्दों में लिव इन रिलेशनशिप को मान्यता प्रदान की है। कुछ समय पूर्व तक लिव इन को भ्रष्टाचार की संज्ञा दी जाती थी, परन्तु अब यह हमारे जीवन का अंश बनता जा रहा है।

जरा हमारे सामाजिक इतिहास पर गौर करें। करीब 70-80 वर्ष पूर्व तक वैवाहिक सम्बंध घर का नाई या पंडित ही तय करता था कि किसका लड़का किसकी लड़की के लिए उपयुक्त है और परिवार का मुखिया ही घर-घराना देखकर सम्बंध तय कर देता था। घूंघट में ही शादी होती थी। लड़का-लड़की सुहागरात के दिन ही पहलीबार एक-दूसरे को देख पाते थे।

कालान्तर में सगाई के पूर्व एक-दूसरे को अनेक परिवार-जनों की उपस्थिति में बाग-बगीचों में देखने-दिखाने की पद्धति शुरू हुई। फिर मित्रों और सखी-सहेलियों के माध्यम से लड़के-लड़की की राय जानने की पद्धति शुरू हुई। फिर एक-दूसरे के साथ कुछ समय के लिए घुमने-घुमाने की अनुमति दी जाने लगी। फिर सगाई पूर्व या सगाई और शादी के बीच के पीरियड में कोर्टशिप का चलन हुआ। आज लड़के-लड़कियों द्वारा अपना जीवनसाथी स्वयं चुनना सामान्य सी बात हो गई है। लव मैरिज हमारे जीवन में धड़ल्ले से प्रवेश कर चुकी है और लिव इन दस्तक दे रहा है।

स्मृतियों के शिखर (21) : डॉ. महेन्द्र भानावत

छोटीसादड़ी गुरुकुल में दो वर्ष जैसे सौ वर्ष

छोटीसादड़ी के श्री गोदावत जैन गुरुकुल का शैक्षिक योगदान कभी भूल नहीं सकूंगा। मैंने वहां 9वीं तथा 10वीं की कक्षा उत्तीर्ण की। यों भूमिका तो पहले से मेरे बड़े भाई जिन्हें मैं 'दादाभाई' कहता था, ने बना रखी थी। वे वहां तीन वर्ष रहे और 8वीं से 10वीं तक की पढ़ाई की। पढ़ाई में वे सदैव ही माला में प्रथम मणिये बने रहे। बोर्ड की आठवीं की परीक्षा में सर्वाधिक अंक छह विषयों में से पांच में डिस्टींक्शन लाये। उन्होंने 1952 में हाईस्कूल की परीक्षा भी सर्वोच्च अंकों से उत्तीर्ण की। कुल 20 छात्रों में से मात्र पांच ही पास हुए। प्रथम श्रेणी केवल भाई साहब के पल्ले पड़ी। ऐसा परिणाम गुरुकुल के पूरे इतिहास में न पहले कभी रहा न बाद में ही।

भाई साहब ने पहलीबार विद्यार्थियों में कवित्व एवं लेखन कला को प्रोत्साहन देने के लिए हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना की और मंत्री बने। पहलीबार गुरुकुल से वार्षिक पत्रिका निकाली जिसके छात्र संपादक बने और उन्हीं दिनों गुरुकुल का रजत जयंती समारोह मनाया गया जिसके कवि सम्मेलन की स्मृति मुझे अभी भी है।

मध्यप्रदेश से हास्य कवि कुंज बिहारी लाल पांडेय की 'आगरे में रुक गई ट्रेन चीखती हुई' जिस लहजे में उन्होंने पढ़ी और जो रंग-व्यंग्य उन्होंने उड़ेला, कमाल का था। उदयपुर से डॉ. प्रकाश 'आतुर' तथा योगेश 'अटल' तक भरपूर युवा-मन की उमंग लिये थे। वे ज्यों-ज्यों अपनी कविता के उठाव को बुलंदगी देते त्यों-त्यों अपने पांवों के पंजों को भी ऊपर उठाये बुलंद ओज तथा जोश खरोश में तालियों की बौछारों में भीगे होते।

डॉ. प्रकाशजी तो एम.ए. के दौरान भी मेरे गुरु बने किन्तु अंत तक अपने गुरुत्व के लबादे को दूर किये रहे। डॉ. अटल ने बाहर की दुनियां ही अधिक देखी। एकबार 'बड़े' के रूप में वे कलामंडल आये तब मुझे उनका बड़ा होना तो अच्छा लगा किंतु एक अच्छी पहचान के यारबाज बड़े भाई से वंचित होना बहुत अखरा। भाई साहब ने उस कवि सम्मेलन में जो कविता पढ़ी उसकी शीर्ष पंक्ति मुझे अभी भी याद है- 'महल के पाषाण कुंठित, कुटीर कंकड़ आज मचला।' यही कविता वहां की वार्षिक पत्रिका में भी छपी जिसकी संपादकीय टिप्पणी में लिखा गया था-

'शाला के इस तरुण कवि की मूक साधना में दलित कुटीर के प्रति अनुराग और प्रासादों में विराग ले शोषणहीन समाज के सृजन की दिव्यानुभूति परिलक्षित होती है। कवि की कल्पना मधुर, प्रांजल एवं हृदयग्राही है। गुरुकुल के सरस्वती मंदिर का यह पुजारी मां भारती के चरणों में कभी अपनी साहित्यिक कृति प्रस्तुत करेगा, ऐसी मंगल कामना है।'

भाई साहब के इन सारे संस्कारों का प्रभाव मुझ पर पड़ा। कमी रही तो केवल यह कि मैं पढ़ने में उनकी तरह अव्वल, तथा योग्यतम नहीं रहा। यही सोच एकबार उन्होंने मुझे कहा भी कि- 'तेरा पढ़ना व्यर्थ है।' इस पर मैं निरुत्तर नहीं रहा। बोला- 'जीना तो व्यर्थ नहीं है?' प्रयत्न करने पर भी वांछित फल की प्राप्ति का कोई खुदाई दावा नहीं कर सकता।

याद करता हूं तो पहली कविता मैंने चौथी कक्षा में पढ़ते लिखी और प्रति शनिवार की साप्ताहिक सभा में पढ़ी जो सराही गई। हौसला बढ़ाने वाले साहित्य-गुरु शीलव्रतजी शर्मा थे जो बाद में उदयपुर आकर बस गये। वे अब भी छंद-रचना करते हैं। पुरानी चाल की पकी हुई रचनाओं में वे सहज पटु, पारंगत और पारखी हैं।

छोटीसादड़ी गुरुकुल में शनिवार को साप्ताहिक सभा होती थी। इसमें छात्र कविताओं, कहानियों, गल्पों, मिमिक्री, मोनो एक्टिंग आदि के माध्यम से अपनी बौद्धिक प्रतिभा-क्षमता का निखार करते थे। मैं हर बार नई रचना सुनाता था। साहित्यिक प्रतियोगिताएं भी आयोजित होती थीं। एक अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता का मुझे स्मरण आ रहा है। इसमें दस-दस छात्रों के दो समूह थे। अंत में जो एक-एक छात्र रहा उनमें से एक मैं था। सामने वाला छात्र बड़ी अच्छी तैयारी में था। उसे रचनाकारों के विभिन्न छंद याद थे। इस दृष्टि से मैं बहुत पोचा था किंतु मन में जिद्द चढ़ गई थी कि चाहे कुछ भी हो जाय, मैं हार नहीं खाऊंगा सो मैं तत्काल छंद रचना कर अपनी बाजी बनाये रहा। गुरुजन स्तंभित थे। सामने वाला साथी अपनी याददाश्ती के कमाल से भारी पड़ रहा था किंतु मेरा तात्कालिक बौद्धिक रचना-कौशल भी कम प्रभावी नहीं था। धीरे-धीरे उस साथी का खजाना खाली होता रहा और मैं सर्वथा खाली रहकर भी अंत तक भरा-भरा रहा सो जीत का सेहरा मेरे ही सिर पर बंधा लेकिन आज जब मैं सोचता हूं तो महसूस करता हूं कि वह जीत जाता तो ठीक था। मैं तो आज भी कविता कर रसवान बना हुआ हूं पर जो किताब भेंट स्वरूप मिली वह अभी भी सहजी हुई है।

मार्च में दसवीं की परीक्षा बोर्ड से होती थी। हमारा परीक्षा केन्द्र प्रतापगढ़ था। उससे पूर्व स्कूल की ओर से दिया गया विदाई समारोह याद आ रहा है। छात्रसंघ परामर्शक गुरुवर सागरमलजी बीजावत ने तब प्रत्येक छात्र को अपनी हस्तलिपि में लिखकर एक-एक रुक्का दिया था जो अनायास ही मेरे पास संभला रह अब एक धरोहर ही बन गया है। उसमें लिखा था-

हे तरुण साहित्यकार ! तुम मानव अभिषक्ति 'महेन्द्र' बनो। यही कामना। सरस्वती की अपूर्णता तुम्हें पाकर पूर्ण हो। तुम्हारी वाणी में जगती तल के स्वर मुखरित हों। तुम्हारे उस आलौकिक ब्रह्मानंद क्षीरसागर में मानव अमरत्व प्राप्त करे। अभिन्न ही समझना हमें।

-छात्रसंघ, गुरुकुल

बीजावतजी गंभीर प्रकृति के अध्ययनशील तथा अनुशासन प्रिय शिक्षक थे। उनमें छात्रों में प्राप्त सहज रुचि, प्रतिभा तथा कौशल को पहचानने की अद्भुत क्षमता थी साथ ही विद्यार्थियों को हर संभव सहयोग करने, उन्हें उचित अवसर सुलभ कराने तथा मौका आने पर सम्मानजनक प्रतिष्ठा दिलाने में सदैव आगे रहते थे। वर्षों व्यतीत हो जाने के बाद आज भी वे अपने छात्रों की कुशलक्षेम लेते रहते हैं तथा उनके उत्कर्षमय जीवन को नजदीक से निगाहों में निकाल शुभाकांक्षा की झोली भरते हैं।

गृहपति नानालालजी मट्ठा सभी छात्रों पर समदृष्टि रखते थे। वे सहज नहीं थे पर सर्वथा निराभिमानी तथा छात्रों के लिए समयबद्ध अनुशासक थे। डेढ़ सौ-दो सौ छात्रों में कुछ उद्दंड स्वभाव के भी थे इसी कारण वे गुरुकुलीय सुधारगृह में दाखिला पाये थे। मुझे मट्ठाजी ने कभी कोई डांट नहीं पिलाई लेकिन मैंने एकाधबार सबके बीच छात्रों को डांटते, जोर की चपत लगाते देखा। चपत खाये छात्रों का चेहरा लाल-गुलाबी होते भी मैंने देखा।

मुझे अपने बाल बढ़ाकर रखने का शौक था। मेरे देखादेख अन्य छात्रों ने भी बाल बढ़ाने शुरू कर दिये। मट्ठाजी को यह सब अच्छा नहीं लगता था। वे स्वयं छोटे-छोटे बाल रखते थे। ऐसे कि न कभी तेल की आवश्यकता रहती न कांच-कंघे से ही उन्हें संवारने की जरूरत होती। एकदिन अचानक घंटा बजाकर उन्होंने हमें हॉल में इकट्ठा किया और सख्ती से बोले कि कल छुट्टी का दिन है। जिन छात्रों के सिर के बाल बढ़े हुए हैं वे कल कटवा लें अन्यथा या तो आपके बाल रहेंगे या फिर नाना मट्ठी ही।

यह सुनते ही सन्नाटा छा गया। कुछ छात्र मन में उग्र हुए। हमने आपस में मसखरी की, इससे तो पूरा सिर सफाचट हो जाय तो अधिक ठीक रहेगा। खोपड़ी भी तब चमक मारने लगेगी। मैंने तुरप दी, वे खेत देखे होंगे जब उनसे मकई ज्वार काट ली जाती है और तने का जरा सा हिस्सा रह जाता है। सिर के बाल भी जब वैसे हो जायेंगे तो सिर पर रखी टोपी भी नहीं टिक पायेगी लेकिन तय रहा कि मट्ठा सा. रहें। हमारे बालों का क्या माजना! कुछ दिनों बाद वे पुन: उदित हो जायेंगे। सो कांच कंघे सब धराशायी हो गये और तेल की शीशी की उम्र बढ़ गई।

वर्षों बाद एकबार भाई साहब ने उदयपुर में जैन विद्वत् परिषद की संगोष्ठी रखी। उसमें मट्ठा साहब को आमंत्रित कर उनका ठाठदार सम्मान किया गया। उनसे भेंट के दौरान मैंने अपने लम्बे बालों को छूते हुए उस बीती घटना का जिक्र किया और कहा कि संभवत: उसी कारण मेरे बाल बढ़े हुए हैं। बाल बढ़ाने के जिक्र में कह दूं कि एकबार नंदबाबू ने कुछ मित्रों के बीच मेरे बालों में अपनी अंगुलियां घुमाते कहा कि 'महेन्द्र इस भ्रम में मत रहना कि बाल बढ़ाने से सभी चीजें बड़ी हो जाती हैं।' उनके इस विनोदी व्यंग्य-कथन से साथियों में ठहाका चला किंतु मेरे से कोई जवाब नहीं बना। घर आकर मैंने उस घटना को कविता में बांधा। शीर्षक दिया- मैंने बाल बढ़ाये। जब 'कोई-कोई औरत' नाम से कविता संग्रह प्रकाशित हुआ तो भूमिका लेखक डॉ. प्रभाकर माचवे जब उदयपुर आये तो एक कविता गोष्ठी में मैंने वही कविता पढ़ी। नंद बाबू को उत्तर मिल गया और अन्यों को उस घटना की जानकारी।

गुरुकुल में एक मुन्ना अग्रवाल था मुम्बई का। पहलीबार उसके पास नहाने की पियर्स देखी। उसकी खुशबू से बाहर का रोम-रोम ही नहीं, भीतर का अन्तस भी जैसे खुशनुमा हो गया। मुन्ना बोला, यह पानी में डूबती नहीं है। यह सुन पानी भरे होज में फैंकी तो मेढ़क सी तैरती मिली।

वहां एक कमरे में तीन-तीन की दो पांत में छह छात्र रहते थे। दोनों ओर बीच में आमने-सामने दरवाजे और उनके आजुबाजु दो-दो खिड़कियां। हम साथियों में शैतान कोई नहीं था मगर कभी-कभी मसखरी चढ़ आती। छुट्टी के दिन सुबह प्रभातफेरी में जाना था। हम दो साथी, मैं तथा सिरेमल सेठिया जल्दी उठ गये और गहरी नींद में सोये रोड़ीलाल का पूरा मुंह लाल, पीले, हरे रंग के चकतों से भर दिया। दो-दो की कतार में सभी छात्र तीन किलोमीटर दूर बसे छोटीसादड़ी पहुंचे तब तक रात्रि का जाना और दिन का आना हो गया था सो सबकी निगाह में रोड़ीलाल का मुंह आ गया।

सबके बीच हंसी और फुसफुसाहट का दौर शुरू हो गया। दबी हुई आवाज निकलने लग गई कि ऐसा किसने किया तब अचानक ही मट्ठा साहब अपनी हंसी नहीं रोक पाये और बोल पड़े- 'दूसरा कौन करेगा, इसी ने किया होगा।' इस पर जोर का ठहाका बरपा तब रोड़ीलाल भी किसी के इशारे से जान पाया कि उसी का मुंह कुछ विशिष्ट हो गया है। हुआ वही जो होना था, रोड़ीलाल शर्माता, झेंप खाता, मुंह लुकाता हमारे साथ लौटा।

रोड़ीलाल शायद उसके बचपन का नाम था। वहां तो वह रत्नेश था जैसा मेरे बचपन का नाम मिट्ठू था। जब नाथूराम ने गांधीजी की हत्या कर दी तो भाई साहब ने अपना नाम बदल नाथू से नरेन्द्र और उनके साथ-साथ मेरा भी महेन्द्र कर दिया।

वहां एक मोहन आंजना था। ग्रामीण परिवेश का, गोलमटोल डीलडौल वाला हंसमुख मौजी जीव। सिरेमल सेठिया मेरे सबसे नजदीकी मित्रों में थे। उनकी हर बात में फुलझड़ी सी सुहाती मुस्कान से वे सबके प्रियभाजन थे। साहित्यिक अभिरुचि से लबालब वे कविता भी करते। भाषणबाजी तथा चुटकुली बातों में भी पटु थे। विनोदी तो थे ही। चित्त से सरल और सौम्य स्वभाव लिये थे। उनसे अब भी मेरा हाऊ-हलो संपर्क बना हुआ है। रतलाम के छात्र अधिक थे। कुंदन रोशन चोरड़िया दो भाई थे, धनी घर के किंतु उनकी प्रकृति से कभी ऐसा एहसास नहीं हुआ। शांतिलाल बांठिया मुखर थे जबकि बाबूलाल दरड़ा और मांगीलाल कुदाल अपने हाल में हाल फिलहाल थे। सेठियाजी ने संघर्षमय जीवन जीकर आदर्श शिक्षक के रूप में अपनी पहचान और पैठ बनाई। उन्होंने बताया कि कुदाल रोशन तथा दरड़ा जैसे मित्र अब स्मृतिशेष हैं।

गुरुजनों में नेमिचंदजी सुराणा प्रधानाध्यापक के रूप में बड़े सौम्य, सुदर्शी, सुभाषी तथा स्नेहशील सात्विक प्रकृति के नाजुक मनस्वी थे।

पं. शोभाचंदजी श्वेत परिधानी धोती, झब्बा और टोपी में संवरे सुहाने लगते थे। हिंदी और धर्म उनके प्रिय विषय थे। खद्दर के पाजामे जब्बे में काले बालों की विशेष पहचान देते पुखराजजी जैन कॉमर्स पढ़ाते। आलतू-फालतू की बातें छोड़ वे पूरी तैयारी के साथ कक्षा में प्रवेश करते और ब्लेक बोर्ड का सहारा लेते अपने विषय को जिम्मेदारी के साथ छात्रों के गले उतार देते। राधामोहनजी ने जीवनभर आदर्श शिक्षक की भूमिका निभाई। कभी भी, कोई भी, कहीं भी उनके पास पहुंच जाता, वे उन्मुक्त भाव से गंगा की तरह ज्ञान का प्रवाह खोल देते।

मंत्री पद पर रहते चांदमलजी नाहर ने बड़ा सुयश लिया। उनके रहते गुरुकुल ने बड़ी तरक्की की और छात्रों की संख्या में भी वृद्धि होती रही। भाई साहब पर पं. शोभाचंद्रजी की अतिकृपा रही फलस्वरूप उन्होंने स्थायी रूप से उन्हें अपने परिवार के साथ जोड़ने के लिए अपनी बहिन शांता से सम्बंध करने का प्रस्ताव रखा जिसे भाई सा. ने स्वीकार कर लिया। पंडितजी के बड़े भाई नानालालजी मजिस्ट्रेट थे और छोटे भाई भूपेन्द्रजी मेरे सहपाठी थे। वे बड़े स्नेहिल, यारबाज और मजाकिया प्रकृति के जानदार साथी के रूप में अंत तक मेरे अपने बने रहे। उनके निधन के बाद वैसा ही रिश्ता उमेश वया तथा अन्य परिजन निभाये हुए हैं। यह हमारे लिए सुखद-संयोग का उल्लेखनीय पक्ष है।

वर्तमान हालात जानने की जिज्ञासा में जब मैंने एडवोकेट उमेश वया से बातचीत की तो उन्होंने बताया कि अब वे सारी प्रवृत्तियां ठप्प हैं। पूरा परिसर ताले में बंद है और जो बारह ट्रस्टी थे उनमें से नौ स्मृतिशेष हो गये हैं। मुझे यह सब सुन धक्का ही लगा। मेरा सौभाग्य यह रहा कि मेरा अंत तक इन सबसे सान्निध्य-संपर्क बना रहा और जब भी मिला, मैं कृतार्थ ही हुआ। काश! सब युग में ऐसे गुरु सबके हों। सच में, छोटीसादड़ी के दो वर्षीय अध्ययनकाल में मुझे जो वेतना, प्रेरणा और प्रोत्साहन मिला, लगा जैसे मैंने सौ वर्षों के अपने जीवनकाल को सार्थक कर लिया है।

सद्य प्रकाशित

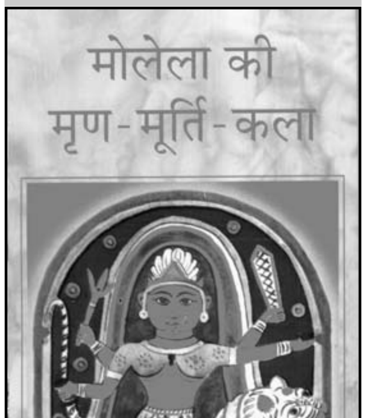

सिटी फाउंडेशन ने 130 मिलियन का निवेश किया

उदयपुर। सिटी फाउंडेशन ने छह युवा-केन्द्रित कार्यक्रमों में भारतीय मुद्रा में 130 मिलियन (2 मिलियन यूएस डॉलर) निवेश करने की घोषणा की है। इस निवेश का लक्ष्य पूरे भारत में 16-25 आयु वर्ग के 13000 अल्प आय वाले युवाओं के लिए रोजगार की योग्यता एवं उद्यमशील अवसरों में इजाफा करना है। यह सहायता राशि सिटी फाउंडेशन के विश्वव्यापी अभियान पाथवेज टू प्रोग्रेस के अंतर्गत 2016 इंडिया इनोवेशन ग्रांट प्रोग्राम (आइआइजीपी) के माध्यम से मुहैया की गई है। इस अभियान के द्वारा सुविधाहीन युवाओं में उद्यमशील मानसिकता, नेतृत्व क्षमता, आर्थिक एवं कामकाजी कौशल का विकास किया जाता है और वे पहली नौकरी के साथ अर्थव्यवस्था की मुख्य धारा में शामिल होने लगते हैं।

सिटी इंडिया के पब्लिक अफेयर्स ऑफिसर, देवाशीष घोष ने कहा कि विगत तीन वर्षों में हमने वैसे असाधारण संगठनों के साथ सहभागिता की है जो अपने-अपने क्षेत्रों में अव्वल हैं और जीवन के तमाम क्षेत्रों में भारत को शक्तिशाली बनाने के प्रति अत्यंत समर्पित हैं। इंडिया इनोवेशन ग्रांट प्रोग्राम द्वारा भारत के विकास क्षेत्रों की जबर्दस्त प्रतिभा एवं विलक्षणता की सहायता की मदद की जाती है। उन्होंने कहा कि हम अपने साझीदारों की प्रगति से बेहद उत्साहित हैं। हम भारत सरकार के महत्वपूर्ण स्किल इंडिया मिशन के साथ है।

वर्ष 2016 आइआइजीपी फरवरी में आरंभ हुआ था, भारत में स्थानीय एनजीओ से प्राप्त 150 अभिरुचि निवेदनों में छह प्रोग्राम को चुना गया जिनमें गैर-लाभकारी संगठन चाइल्ड फंड इंडिया, फाउंडेशन ऑफ एमएसएमई क्लटर्स (एफएमसी), लर्निंग लिंक्स फाउंडेशन, प्रथम एडुकेशन फाउंडेशन, समर्थनम ट्रस्ट फॉर द डिजेबल्ड ऐंड टेक्नोसर्व इंक. सम्मिलित हैं। कुल मिलाकर इन गैर-लाभकारी संगठनों द्वारा सुविधाहीन युवाओं में महत्वपूर्ण व्यवहारगत परिवर्तन आने और उद्यमशीलता प्रशिक्षण, रोजगार सुलभता एवं नेतृत्व, वित्तीय एवं कार्यस्थल संबंधी कौशल विकास अवसरों के माध्यम से सहायता पहुँचने की अपेक्षा है। इस प्रोग्राम का लक्ष्य राष्ट्रीय दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने के लिए टेक्नोलॉजी का लाभ उठाना और साझीदारों को आकर्षित करना है। इससे औसत प्रभाव के साथ दीर्घकालिक, नवोन्मेशी औ मापनीय मॉडल्स में वृद्धि होगी।

वोडाफोन एम-पैसा आउटलेट्स से निकाल सकेंगे नकदी

उदयपुर। वोडाफोन इण्डिया ने अपने 8.4 मिलियन से अधिक एम-पैसा उपभोक्ताओं के लिए एक अनूठी पेशकश की है जिसके तहत वे अपने डिजिटल वॉलेट का इस्तेमाल करते हुए देशभर के 1,20,000 से अधिक वोडाफोन एम-पैसा आउटलेट्स से नकद राशि निकाल सकते हैं, जो उपलब्धता पर आधारित होगी।

वोडाफोन एम-पैसा के बिजनेस हैड सुरेश सेठी ने कहा कि वोडाफोन एम-पैसा के उपभोक्ताओं को अब नकदी के इंतजार में अपनी बैंक शाखा या एटीएम के बाहर लम्बी कतारों में खड़े नहीं रहना पड़ेगा। हमने देशभर में 1,20,000 से अधिक एम-पैसा आउटलेट्स का राष्ट्रव्यापी नेटवर्क स्थापित करने के लिए बड़ी मात्रा में निवेश किया है, यह संख्या देश में बैंक शाखाओं की संख्या के बराबर है। इनमें से 56 फीसदी से अधिक आउटलेट ग्रामीण भारत में स्थित हैं, जो दूर-दराज के इलाकों में लास्ट माईल उपलब्धता को सुनिश्चित करते हैं। हमारे उपभोक्ता इनमें से किसी भी आउटलेट पर जाकर वोडाफोन एम-पैसा के अनूठे कैश आउट फीचर का इस्तेमाल करते हुए अपनी सुविधा के अनुसार डिजिटल वॉलेट से पैसा निकाल सकते हैं। इस वॉलेट को क्रेडिट/ डेबिट कार्ड या नेट बैंकिंग के ज़रिए आसानी से लोड किया जा सकता है। इसके अलावा वोडाफोन एम-पैसा वॉलेट का इस्तेमाल ऑनलाईन शॉपिंग, बिलों के भुगतान तथा परिवारजनों या दोस्तों को पैसा भेजने के लिए भी किया जा सकता है। ऐसे विशेष फीचर्स, राष्ट्रव्यापी नेटवर्क एवं उत्कृष्ट सर्विस नेटवर्क वोडाफोन एम-पैसा को आम जनता के लिए आदर्श डिजिटल वॉलेट बनाते हैं। नकद निकासी सुविधा का लाभ उठाने के लिए उपभोक्ता को अपना पहचान प्रमाण पत्र लेकर नज़दीकी वोडाफोन एम-पैसा आउटलेट जाना होगा जहां वे उपलब्धता एवं आरबीआई के दिशानिर्देशों के अनुसार नकद राशि पा सकते हैं।

जिंक को सस्टेनेबिलटी रिर्पोटिंग अवार्ड

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक को उत्कृष्ट सस्टेनेबिलिटी रिर्पोटिंग के लिये वर्ल्ड सीएसआर डे-ऑर्गेनाइजेशन ने सस्टेनेबिलिटी रिर्पोटिंग अवार्ड प्रदान किया है। मुम्बई में हुए समारोह में एक्सेलिटी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुमित साभरवाल एवं आईजीआई के समूह निदेशक प्रो. चेतन वाकाल्कर ने यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किया। इस पुरस्कार को जिंक की तरफ से यह अवार्ड चंदेरिया लेड जिंक स्मेल्टर के सस्टेनेबिलिटी प्रबंधक हितेन्द्र भुपतावत ने ग्रहण किया। हिन्दुस्तान जिंक के हेड-कार्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि सस्टेनेबिलिटी रिर्पोटिंग की प्रमाणिकता हिन्दुस्तान जिंक के पर्यावरण, सुरक्षा, सामाजिक विकास एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्र में निरन्तर प्रयासों को प्रमाणित करती है।

वी-मार्ट पर कैश-विड्रॉवल की सुविधा

उदयपुर। वी-मार्ट के 116 से अधिक शहरों में 136 स्टोर पर नागरिकों को अपने डेबिट कार्ड से 2000 रूपए निकालने हेतु स्मार्ट एटीएम की सुविधा प्रदान की जाएगी। वी-मार्ट रिटैल प्रा.लि. के सीएमडी ललित अग्रवाल ने कहा कि हम भारत सरकार द्वारा समर्थित इस पहल का पूरी तरह से समर्थन करते हैं। हमारा प्रयास नागरिकों के सामने आने वाली कठिनाइयों में उनकी सहायता करना और मौजूदा नकदी की कमी की स्थिति में सरकार की सहायता करना है। इसके लिये वी-मार्ट के सभी 136 स्टोर नागरिकों को कैश विड्रॉवल की सुविधा प्रदान करने हेतु स्मार्ट एटीएम की सुविधा प्रदान करेंगे, जिससे कि बैंकों में लंबी लाइनों की स्थिति से नागरिकों को राहत प्रदान की जा सकें। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी परिपत्र के तहत सभी पीओएस ईडीसी डिवाईसेस को डेबिट कार्ड के माध्यम से कैश विड्रॉवल के लिये उपयोग किया जा सकता है। वी-मार्ट, जो देश के 14 से अधिक राज्यों के टीयर-2, टीयर-3 और टीयर-4 शहरों के बाजारों की मांग को पूरा करता है, वर्तमान में बैंकों के लिये सीमित जोखिम के साथ आसान नकदी उपलब्धता के साथ देश के दूरदराज के क्षेत्रों के नागरिकों को सक्षम बना रहा है।

टोयोटा कैरावैन का आयोजन

उदयपुर। टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने सुरक्षा और पर्यावरण के प्रति अपनी कटिबद्धता की पुनर्पुष्टि की और इसके लिए एक्जीबिशन कनवेंशन सेंटर, जयपुर में टोयोटा कैरावैन का आयोजन किया। एक स्थायी भविष्य तैयार करने के उद्देश्य से टीकेएम ने एक साझे मंच का आयोजन किया था।

इसमें सरकार और उद्योग के विशेषज्ञों के साथ-साथ टोयोटा मोटर कॉरपोरेशन जापान, टोयोटा मोटर एशिया पैसेफिक सिंगापुर और टोयोटा किर्लोस्कर मोटर के वरिष्ठ प्रबंधन के अग्रणी और विशिष्ट ओपिनियन लीडर्स ने हिस्सा लिया ताकि अंतर सक्रिय सत्रों की श्रृंखला के जरिए सुरक्षा और पर्यावरण अनुकूल टेक्नालॉजी के बारे में जागरूकता फैलाई जा सके।

इनमें युनुस खान कैबिनेट मंत्री-लोक निर्माण और परिवहन विभाग, राजस्थान सरकार, राजेशकुमार यादव, प्रबंध निदेशक-राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम, जयपुर और डॉ मनीषा अरोड़ा, एडिशनल ट्रांसपोर्ट कमिश्नर और संयुक्त सचिव, राजस्थान सरकार शामिल हैं। इसके अलावा टोयोटा किर्लोस्कर मोटर के प्रतिनिधि टी एस जयशंकर, डिप्टी मैनेजिंग डायरेक्टर टोयोटा किर्लोस्कर मोटर और एन राजा, डायरेक्टर और सीनियर वाइस प्रेसिडेंट टोयोटा किर्लोस्कर मोटर भी उपस्थित थे।

बिग बाजार और एफबीबी स्टोर्स में मिलेगी नकदी

उदयपुर। बिग बाजार ने घोषणा की कि उसने सभी स्टोर तथा सभी एफबीबी स्टोअर्स से ग्राहक अपने डेबिट/एटीएम कार्ड का प्रयोग कर खुद के बैंक से 2000 रूपये निकाल सकें, इसके लिए सक्षम किए गए है। यह सुविधा अब देशभर के 115 से अधिक शहरों और गांवों में 258 बिग बाजार और एफबीबी दुकानों में उपलब्ध है।

फ्यूचर रिटेल लि. के अध्यक्ष किशोर बियानी ने कहा कि पीओएस मशीन पर इस सुविधा को सक्षम करने के लिए स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ने अपनी नगद रकम द्वारा बिग बाजार को मदद की है। देश के किसी भी शेड्युल्ड बैंक के अपने खातों से ग्राहक नकदी निकाल सकते है। कुछ नोटों को रद्द करने के कारण ग्राहकों को पेश आ रही मुश्किलें कम करने और अपने उद्देश्य को पूरा करने में सरकार की पहल का समर्थन करने के लिए हम कोशिश कर रहे हैं। नकद निकासी के लिए ग्राहक स्टोर में समर्पित कब्श काउंटर पर जाकर, अपना डेबिट/एटीएम कार्ड स्वाइप कर, पिन दर्ज कर अपने खाते से 2000 रुपये तक निकाल सकते हैं।

उन्होंने कहा कि पिछले दो सप्ताहों में ग्राहकों को पेश आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए बिग बाजार और फ्यूचर ग्रुप के अन्य स्टोर ने यह कदम उठाए है। बिग बाजार ने सभी खाद्य और किराना वस्तुओं पर 5 छूट, सभी वस्त्र और फैशन आइटमों पर 10 छूट और उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला पर इसी तरह से छूट की घोषणा की है। सभी स्टोर नॉन-कॅश पेमेंट के लिए आठ से अधिक तरीकों की अनुमति देते हैं। इनमें सभी डेबिट/एटीएम कार्ड, क्रेडिट कार्ड, फ्युचरपे, मोबाइल वैलेट, मोबीक्विक, पेटीएम वैलेट, सोडेक्सो कूपन, गिफ्ट वाउचर और बिग बाजार प्राफिट क्लब कार्ड का समावेश है। इसके अलावा सभी खाद्य, किराना और रोजमर्रा की जरुरतों के सामान की पर्याप्त आपूर्ति, स्वतंत्र बिग बाजार स्टोर में पार्किंग फीस की छूट और विभिन्न स्थानों पर दुकानों के जारी रहने की अवधि बढ़ाना सुनिश्चित किया गया है। नकद निकासी की यह सुविधा बैंकों, भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा लगाए गए सभी प्रतिबंधों और समय समय पर जारी सरकारी सूचनाओं के अधीन रहेगा।

वोडाफोन सुपरनेट 4जी लॉन्च

उदयपुर। वोडाफोन इण्डिया ने जोधपुर में अपनी वोडाफोन सुपरनेट 4जी सेवा के लॉन्च की घोषणा की। राजस्थान में जोधपुर से 4जी सेवाओं कि शुरूआत करने के लिये, महाराज गज सिंह ने वोडाफोन को बधाई दी। मार्च 2017 तक 4जी सेवा राजस्थान के सभी मुख्य शहरों और नगरों में शुरू कर दी जाएगी।

वोडाफोन इण्डिया राजस्थान के सीओओ नवीन चौपडा ने कहा कि वोडाफोन सुपरनेट 4जी सेवा को केरल, कर्नाटक, कोलकाता, दिल्ली एनसीआर, मुम्बई, हरियाणा, यूपी ईस्ट, गुजरात एवं शेष बंगाल सर्कल में सफलतापूर्वक लॉन्च किए जाने के बाद राजस्थान में लॉन्च किया गया है। यह अत्याधुनिक नेटवर्क वोडाफोन सुपरनेट 4जी उपभोक्ताओं को माय-फाय एवं डोंगल के माध्यम से तेज़ गति की इन्टरनेट सेवाएं उपलब्ध कराएगा।

वोडाफोन सुपरनेट 4जी उन उपभोक्ताओं के लिए मोबाइल इन्टरनेट के अनुभव को बेहतर बनाएगा जो तेज़ गति पर वीडियो और म्युज़िक डाउनलोड अपलोड करना चाहते हैं, सहज वीडियो चैट का लाभ उठाना चाहते हैं या बड़ी आसानी से अपने पसंदीदा ऐप्स पर कनेक्ट होना चाहते हैं। उपभोक्ता हाई डेफिनेशन वीडियो स्ट्रीमिंग, मोबाइल गेमिंग वीडियो कॉलिंग का भी लाभ उठा सकते हैं।

अपने विश्वस्तरीय नेटवर्क एवं अनुभव के साथ, वोडाफोन भारतीय उपभोक्ताओं के लिए 4जी पर इन्टरनेशनल रोमिंग भी उपलब्ध कराता है। यूके, न्यूजीलैण्ड, यूएई, तुर्की, आयरलैण्ड, सिंगापुर, अल्बानिया, नीदरलैण्ड्स, रोमानिया, जर्मनी, ग्रीस और चेक गणराज्य सहित 16 देशों में जाने वाले उपभोक्ता इन सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। इसके अलावा निकट भविष्य में कई और देश इस सूची में शामिल हो जाएंगे।

वोडाफोन इण्डिया राजस्थान के बिजनेस हैड अमित बेदी ने कहा कि डिजिटल भारत के दृढ़ भागीदार के रूप में हमें खुशी है कि हम 4जी रोलआउट की तीसरी प्रावस्था के दौरान राजस्थान में वोडाफोन सुपरनेट 4जी की शुरूआत करने जा रहें हैं। 4जी में शक्तिशाली इनोवेशन के माध्यम से मोबाइल अनुभव में नई क्रान्ति लाने की क्षमता है जो हमारे काम और हमारे जीवन को बहुत अधिक प्रभावित करती है। वोडाफोन की विश्वस्तरीय विशेषज्ञता तथा 20 देशों में 4जी सेवाओं के लॉन्च का अनुभव हमें प्रोद्यौगिकी की बेहतर समझ देता है तथा उपभोक्ताओं की ज़रूरतों को समझने में भी मदद करता है। वोडाफोन सुपरनेट 4जी सेवाओं को जल्द ही पंजाब, आसाम एवं उत्तर-पूर्व, यूपी वेस्ट, उड़ीसा, महाराष्ट्र एवं गोवा, चेन्नई एवं तमिलनाडू में उपलब्ध कराया जाएगा और यह मार्च 2017 तक 17 सर्कलों के 2400 नगरों में उपलब्ध होगा।

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरूवार 01 दिसम्बर 2016

सम्पादकीय

नरेन्द्र मोदी और नोटबंदी का जलवा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने न केवल भारत में अपितु पूरे विश्व में भ्रष्टाचार के खिलाफ नकेल लगाने को नोटबन्दी का अभिमान छेड़ जन-जन में नई हलचल पैदा कर दी है। भारत में तो सब ओर मोदीजी की जैजैकार ही सुनाई दे रही है। उनके मुंह पर भी मुस्कान ही दिखाई दे रही है जो बैंकों के आगे घंटों लाइन में लग परेशान हो रहे हैं। आन्तरिक खुशी का माहौल देखना हो तो भारत को देखा जा सकता है।

दीवाली पर घर-घर जैसे दीपक जलाकर अन्तरमन का उजियारा देखने को मिलता है। ऐसी खुशी देश की आजादी पर मिली थी। परेशान चन्द वे लोग हैं जिनके पास अपार काला धन संचित है। वे बाहर से तो सबसे अधिक प्रकाशवान बने हुए थे पर उन्होंने पूरे देश में अन्धेरा, कालिख और झूठे कारनामे ही फैला रखे थे।

पूरे विश्व को यह जानना चाहिए कि भारत देश बड़ा रहस्यमय देश है। यह रहस्य अदृश्य अधिक है। चमत्कार और अलौकिकता के सबब कभी-कभी दिखाई दे जाते हैं सपने की तरह। अनुभव भी किये जाते हैं पर पकड़ में नहीं आते। खजानों की तो यह धरती ही है। अकूत अटूट अलूट खजाने हैं, ऐसा सुनते आ रहे हैं। लोगबाग कहते हैं जिसके भाग्य में होता है उसे मिलता है। भाग्य में नहीं होता है तो सारा धन कोयला बन जाता है। जितने भी गढ़-गढ़ैया हैं वे खजानों से भरे पड़े कहे जाते हैं। सभी सांपों के पहरे में हैं। आंखों से अनदेखे हैं।

पर जो दिखाई दे रहा है काला धन, उसने तो पूरे देश को ही बर्बादी के कगार पर धकेल दिया। कोई हिम्मतवर ही कभी-कभी आता है, पैदा होता है जो कुछ उत्तम कार्य कर बैठता है। वह इतिहास में ही नहीं, युग-युगों में भी स्मरणीय बना रहता है। हाल फिलहाल मोदीजी ऐसे ही मनस्वी होकर उभरे लग रहे हैं। समय ही लिखेगा लेख कि कैसे उनका जज्बा सभी को स्वीकार्य होता है। गांधीजी की लंगोट और लाठी का प्रभाव लोगों ने देखा, समझा है। अब मोदीजी का जलवा देखिये। सोने की चिड़िया जाग रही है और फड़फड़ाहट देने लग गई है।

शिक्षण के तरीकों में प्रयोगों को प्रोत्साहित करने पर कार्यशाला

उदयपुर। समग्र शैक्षिक विकास को बढ़ावा देने और शिक्षा की गुणवत्ता को बनाए रखने वाली नेक्स्ट एजुकेशन इंडिया प्रा. लि. की ओर से उदयपुर के होटल रेडिसन ग्रीन में प्रधानाध्यापकों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 'शिक्षण में प्रयोगों' पर चर्चा हुई। नेक्स्ट एजुकेशन के एरिया मैनेजर, नीरज मलिक ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

महारानी गायत्री देवी गर्ल्स स्कूल की प्रिंसिपल सुनीति शर्मा ने स्कूलों में शिक्षण के तरीके में प्रयोग शुरू करने के लिए प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि भारत दुनिया के कुछ विकासशील देशों में से है जहां सफलतापूर्वक नवीन शिक्षण विधियों के साथ प्रयोग किया जाता है। यह कार्यशाला प्रिंसिपलों को 'शिक्षण में प्रयोगों' की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाने में सहायक होगी। उन्होंने नये शैक्षिक मॉडल को विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया ताकि छात्र पारंपरिक विषयों तक ही सीमित नहीं रहे। शर्मा ने कहा कि यह आवश्यक है कि स्कूलों के समग्र विकास के लिए प्रिंसिपलों को एक दूरदर्शी दृष्टिकोण रखना होगा ताकि छात्र आधुनिक शिक्षा प्रणाली से परिचित हो सकें। प्रधानाध्यापकों को नई तकनीक अपनानी होगी जिससे सीखने और अनुसंधान की प्रक्रिया को प्रोत्साहन मिले और छात्रों को व्यस्त रखने में भी मदद मिल सके।

नेक्स्ट एजुकेशन के सीईओ और सह-संस्थापक, ब्यास देव रल्हन ने कहा कि हमारे देश में शिक्षा का क्षेत्र प्रतिस्पर्धी बन गया है। एक तरफ, स्कूलों की तरफ से अपने-अपने स्कूलों के प्रचार को बढ़ावा दिया जा रहा हैं, दूसरी ओर माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ाई में सफलता प्राप्त करते हुए देखना चाहते हैं। छात्रों पर चारों तरफ से पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन का दबाव पड़ता है, जो उनके विकास के लक्ष्यों को जारी रखने में रूकावट पैदा करता है। इन खामियों को दूर करना और छात्रों के बीच एक अलग सीखने का अनुभव आरंभ करना इस कार्यशाला का मकसद था जिससे बच्चों को अनावश्यक तनाव और दबाव का सामना नहीं करना पड़े। कार्यशाला में महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल, रॉकवुड पब्लिक स्कूल, सेंट्रल अकादमी, सेंट टेरेसा, सेंट पॉल, स्टेप-बाइ-स्टेप, सेंट मैरी और एओएल स्कूल के प्रिंसिपलों ने हिस्सा लिया।

विज्ञापन : कालूधन-सोनाचंद लापता

-हरमन चौहान-

प्रिय चिरंजीव कालूधन बेटे,

मंदी के इस दौर में जब से तू इस घर से अचानक गायब हुआ है, तबसे शेयर मंडियों की तरह घर में मातम छाया हुआ है। श्री माल्या व आटोवियो क्वात्रोच्चि, दाऊद की तरह घर से तेरा अचानक गायब होना बड़े दुख की बात है। ऐसे कई लोग हैं जो तुझे बरगला सकते हैं। हमने बिग बॉस के आलेशान मकान के मुकाबले से पांच गुना आलेशान मकान को छान मारा, पर तू अपने मकान में कहीं नहीं मिला। तेरे गायब होने से घर में तेरी मां माया, तुम्हारा भाई तस्करमल और तुम्हारी बहिन महंगाईबाई बड़े व्याकुल व शोकाकुल हैं। बहन ने तो रो-रो कर इतनी हाय-तौबा मचा दी है कि प्याज-आलू के भाव सातवें आसमान पर चढ़ गये हैं। दालें मुंह छिपाये फिर रही हैं। सब्जियों के भाव पूछो तो बिजली का करंट लगता है। बेटा, बता तेरा किसी ने अपहरण कर लिया है तो फोन कर। नकली नोटों के तामझाम में फंसी तुम्हारी मां माया बेहोशी की हालत में है। घर में हम सभी सदस्य तेरा मुंह देखने के लिए लालायित हैं।

कहीं कानून के चक्कर में फंसे हो या किसी खूंखार नेता के पंजे में फंसे हो तो हमें तुरन्त खबर करो। हमारी इज्जत का सवाल है। तुम्हें सरकार के मंत्रियों से लगाकर अफसरों से बच कर आना है। अपना भरा-पूरा घर है। तुम्हें कोई कुछ नहीं कहेगा। तुम दिन दहाड़े आओ या काली अंधेरी रात में, जैसे भी पर तुरन्त आओ। हम सभी बेहाल हैं।

तुम्हारा धरम बाप
अरबपति धनीराम दो नंबरी

पाठकों से निवेदन :

जो कोई हमारे चिरंजीव का पता बताएगा या उसे घर पहुंचायेगा, उसे मुंह मांगा इनाम दिया जाएगा। फोटो उपलब्ध नहीं होने के कारण माफी मांगते हैं।

व्यंग्य

आयकर अधिकारी इस विज्ञापन को देखकर सचेत हो गये। अगले दिन उसी अखबार में उनका विज्ञापन छपा-

प्रिय कालूधन,

हम जानते हैं तुम कहां छिपे हए हो? संन्यासी साधुओं या नामदेवों जैसे निष्कलंकों के चक्कर में मत पड़ना। तुम्हें पकड़ने का हमें अधिकार है। कार्यवाही फाइलों में चल रही है। आदेश मिलते ही तुम्हारे पास होंगे।

-क.ख.ग. आयकर अधिकारी

उसी अखबार में, उसी पृष्ठ पर, उसी कॉलम में तीसरे दिन विज्ञापन यों छपा-

हे काले कुबेर। तुम्हारे नकली धरम बाप धन्नासेठ तुम्हें भूमिगत ही रखना चाहते हैं और आयकर अधिकारी दो नम्बर के छुपे हुए गुमशुदा धन को ढूंढ़ निकालना चाहते हैं। कानून के हाथ माना कि बड़े लम्बे होते हैं लेकिन कानून तोड़ने वालों के हाथ उससे भी लम्बे होते हैं। इस पकड़ा-पकड़ी के खेल में कुर्सी और गादी का चक्कर है। राष्ट्र के प्रति निष्ठा अनुराग या समर्पित भावना कुछ नहीं है। तू तो कठपुतली ठहरा। जनता तेरे कारण परेशान है। हम महंगाई और आर्थिक बोझ से लदे हुए हैं। कमर टूट रही है। तू दो नम्बरी ठहरा। कम से कम यह तो बता दे कि तू किसके आसरे ठहरा हुआ है।

-एक नागरिक

चौथे दिन उसी कॉलम में एक कार्टून छपा जिसका मजबून कुछ इस प्रकार था-

कालेधन के बारे में एक काला मोटा आदमी आयकर अधिकारी को फूलों के गुच्छे में सोने के बिस्कुट भेंट कर रहा है। आयकर अधिकारी पशोपेश में है कि ले या न ले। कुछ ही दूरी पर कमर से झुका एक गरीब आदमी आयकर अधिकारी से पूछ रहा है- सर क्या कालूधन इसी का नाम है? मैंने सोचा कि अपने देश में रोटी का आकार महंगाई के कारण ऐसा हो गया है। हमें तो रोटी के साथ आलू-कांदा चाहिए।

इस कार्टून के साथ सम्पादक की टिप्पणी थी- हम ऐसे विवादास्पद विज्ञापन नहीं छापते हैं। सम्बन्धित पार्टियां नोट कर लें।

जिंक के 'खुशी' अभियान से बड़ों को संदेश

उदयपुर। ओ री चिरैया ..नन्हीं सी गुड़िया अंगना में फिर आ जा रे, बाल विवाह अभिशाप है, बालिका को भी पढने का अधिकार है, सारी उम्र हम मर-मर के जी लिये जैसे संदेशो से शहर के 10 प्रमुख पर्यटन स्थल और चौराहे विशेष आकर्षण के केन्द्र रहे। अवसर था हिन्दुस्तान जिंक के 'खुशी' अभियान का। इस कार्यक्रम के दौरान इन स्थलों से जो भी गुजरा उसने बच्चों द्वारा कला के माध्यम से दिये जाने वाले संदेशों की हास्य और भावुक प्रभावी प्रस्तुति में गहरी रूचि ली।

वंचित बच्चों के प्रति बच्चों और बड़ों की सोच को सृजनात्मक रूप देने के लिये आयोजित हुए इस कार्यक्रम में शहर के 10 प्रमुख स्कूलों के बच्चों ने रंगों के माध्यम से भ्रूण-हत्या, बाल-विवाह, बाल-उत्पीड़न, बाल-भिक्षावृत्ति, बालिका-सुरक्षा, चाईल्ड-ट्रेफिकींग, बाल-मजदूरी, बाल-कुपोषण एवं बाल-शिक्षा पर अपने मन की उदात्त भावनाओं तथा कल्पनाओं को केनवास पर विविध रंगों के माध्यम से चित्रांकित किया साथ ही नुक्कड़ नाटक, कविता, फैन्सी ड्रेस, गीत-संगीत और बैण्ड के जरिये बड़ों को संदेश दिया। दिल्ली पब्लिक स्कूल ने सुखाड़िया सर्कल, केन्द्रीय विद्यालय ने विज्ञान कॉलेज के बाहर, सिडलिंग स्कूल ने फतहपुरा पुलिस चौकी के बाहर, रेयान इण्टरनेशनल ने गुलाबबाग के मुख्य द्वार, द स्टेडी ने आरके मार्बल के बाहर, बोहरा यूथ स्कूल ने कलेक्ट्रेट के सामने, डीएवी ने जिंक कार्यालय के बाहर, सेन्ट मैरी ने सहेलियों की बाड़ी, विद्याभवन ने चेतक सर्कल एवं सेंट मैथ्यूज के छात्रों ने पंचवटी पर प्रात: 9 से दोपहर 12.30 बजे तक अपनी कलात्मक प्रस्तुतियों से लोगों को आकर्षित किया।

आंगनबाड़ी केंद्रों को सहयोग हेतु वंडर सीमेंट सम्मानित

उदयपुर। वंडर सीमेंट को सीएसआर गतिविधिओं के अंतर्गत निंबाहेड़ा स्थित 10 आंगनबाड़ी केंद्रों का नवीनीकरण कर छात्राओं हेतु शैक्षणिक एवं खेल सामग्री भेंट करवाने सहित आंगनबाड़ी चलो अभियान के तहत 900 बच्चों को युनिफॉर्म तथा 2020 बच्चों को पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराने के लिये प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

इस नवीनीकरण अभियान के तहत इमारतों की पुताई तथा इन इमारतों पर चित्र भी साकार किए गये। वंडर सीमेंट द्वारा सौर पंखे, कुर्सियां, सी-सॉ रॉकर, अबॅकस, चार्ट्स आदि शैक्षणिक साहित्य उपलब्ध कराये गये। निबाहेड़ा पंचायत समिति के 1000 छात्राओं को कपड़े तथा बस्ते वितरित किए गये।

वंडर सीमेंट द्वारा किए इस अनोखे अभियान की सराहना करते हुए राजस्थान सरकार ने कंपनी को सम्मानित किया। महिला एवं बाल विकास विभाग, जयपुर के डॉ. समित शर्मा (आईएएस) और जिला कलेक्टर, चित्तोड़गढ़ इंद्रजीत सिंह के शुभ हाथों वंडर सीमेंट के सहायक उपाध्यक्ष वाणिज्य नितीन जैन को चित्तोडगढ डीआरडीए सभागार मे आयोजित मीटिंग मे सम्मानित किया गया।

पोथीखाना

भारतीय भाषाओं में रामकथा के चर्चे

भारतीय भाषाओं में रामकथा के श्रृंखलाबद्ध प्रकाशन के उद्देश्य से अयोध्या, फैजाबाद में उत्तरप्रदेश शासन के संस्कृति विभाग द्वारा 1986 में स्थापित अयोध्या शोध संस्थान सक्रिय है। इसके निदेशक डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह इस गुरुत्तर कार्य के लिए समर्पित भाव से अपनी सेवाएं दे रहे हैं। हाल ही में वाणी प्रकाशन दिल्ली द्वारा उन्होंने भारतीय भाषाओं में रामकथा : आरण्यक नाम से इस क्षेत्र में डूबे मन से कार्य कर रहे विद्वानों के सहयोग से एक उत्तम ग्रंथ प्रकाशित किया है। इसका संपादन सोनभद्र के प्रख्यात विद्वान डॉ. अर्जुनदास केसरी ने किया है। डॉ. केसरी लोकवार्ता शोध संस्थान के सचिव और लोकवार्ता शोध पत्रिका के संपादक हैं।

ग्रंथ के प्रारंभ में संपादक डॉ. केसरी ने विद्वतापूर्वक आरण्यक संस्कृति में रामकथा के प्रसंगों का उल्लेख करते हुए जनजाति-जीवन और संस्कृति-संस्कारों में रामरस के विभिन्न रूपों का उल्लेख करते हुए आदिवासियों की श्रुत-परंपरा में प्रचलित लोकगाथा, लोककथा, लोकनाट्य, लोकसुभाषित के संग्रह एवं संपादन की आवश्यकता पर सबका ध्यान आकृष्ट किया।

ग्रंथ में सम्मिलित कुल 28 आलेख हैं जो विभिन्न ग्रंथों तथा आरण्यक श्रुत साहित्य में वर्णित रामकथा के विविध रूपों से पाठकों को रसमग्न करते हैं। प्रथम आलेख - 'कै तो राखै राम ने कै राखै डाम' में डॉ. महेन्द्र भानावत रोग निदान के लिए राम का नाम स्मरण अथवा दग्ध चिन्ह, डाम के आदिम रूप की परंपरा को आज के संदर्भ में भी उपयोगी मानते हुए लिखते हैं- 'आदिवासी सर्वप्रकारेण राम के ही रंग में रंगे हैं। कई रंगों में होते हुए भी उनका राम-रंग ही अंत में असल और सर्वांगीण होता है इसीलिए सौ से अधिक की उम्र जीते उदा पारगी ने समझाइश देते कहा कि जीवन का रस है वह भी रामरस ही है। सब ओर लीला राम की ही है।' **(पृष्ठ 30)**

डॉ. पूरन सहगल, डॉ. मालती शर्मा, डॉ. अनसूया अग्रवाल, डॉ. यशोधर मठपाल, डॉ. अनूपप्रताप सिंह, डॉ. नंदिता शर्मा ने मालवा, ब्रज, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड, अवधी तथा मधुबनी में रामकथा-चरित्र को लोकजीवन की संजीवनी के रूप में प्रस्तुत किया। डॉ. अर्जुनदास केसरी ने राम कथा की दो अप्रतिम काव्यकृतियां-पाण्डुलिपियां रामार्णव तथा रामायण का जिक्र किया जो अब तक अज्ञात ही रहीं। डॉ. केसरी ने रामायण को अब तक प्राप्त सभी कृतियों से अलग बताते हुए लिखा कि इसके आरंभ में ही 34 पीढ़ी की सूर्य वंशावली दी हुई है। उन्होंने अपने आलेख में सभी के नाम

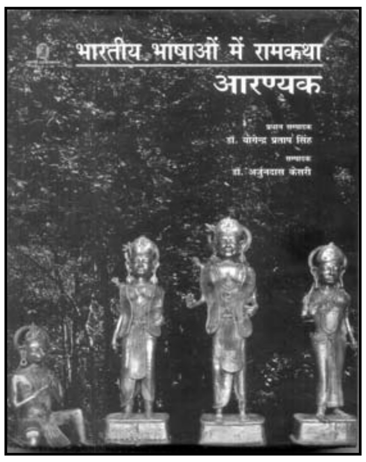

गिनाये हैं। नामावली के अंत में यह दोहा लिखा है-

अष्टाधिक सुत भूप ये,
दये अंस बलवान।
आगे मानुष होयंगे,
सुनिये कृपा निधान।।

तात्पर्य यह है कि राजा के आठ से अधिक पुत्र पैदा हुए जो बलवान थे। इसके बाद संदेश है कि इसके उपरांत मनुष्य होंगे (देव नहीं)।

हे कृपानिधान! ऐसा मेरा (कवि का) अभिमत है। राजाओं के 73 वें क्रम में दशरथ का और 74 वें क्रम में श्री राम का नाम आया है। **(पृष्ठ 135)**

पाण्डुलिपि विशेषज्ञ उदयशंकर दुबे का 'पाण्डुलिपियों में बने रामकथा के प्रसंग-चित्र' आलेख बड़ा श्रमसाध्य, प्रामाणिक तथा शोधपूर्ण तथ्यों से मूल्यवान बन पड़ा है। उनका यह कथन दृष्टव्य है- कागज का आविष्कार हो जाने पर कवि-पंडितों ने सभी विषयों के ग्रंथों को कागज पर लिखना प्रारंभ किया।

इसी के साथ रामकथा के 'वाल्मीकि रामायण' तथा 'अध्यात्म रामायण' की प्राचीन हस्तलिखित प्रतियां मिलती हैं। सर्वप्रथम मुगल सम्राट अकबर ने वाल्मीकि रामायण का फारसी अनुवाद कराकर उसे अपने शाही चित्रकारों से चित्रांकित कराया। इसे हम रामायण की प्रथम सचित्र पाण्डुलिपि कह सकते हैं जिसमें रामकथा के प्रसंगानुसार चित्र उरेहे गये हैं। यह प्रति पांच वर्ष में (सन् 1574-1579 ई.) तैयार हुई थी। कविवर रहीम ने इसी आधार पर वाल्मीकि रामायण की एक प्रति अपने पढ़ने के लिए तैयार कराई थी जो 'फ्रीयर आई गेलरी' वाशिंगटन में सुरक्षित है। इस पाण्डुलिपि के अधिकांश पृष्ठों पर रामकथा-लेखन के साथ चित्र बने हैं। इस प्रति की माइक्रो फिल्म भारतीय मनीषी सूत्रम्-दारागंज, प्रयाग में आरक्षित है। बादशाह जहांगीर के शासनकाल में पानीपत मसीही ने वाल्मीकि रामायण का फारसी अनुवाद किया। यह 'मसीही रामायण' के नाम से जानी जाती है। इसकी एक सचित्र प्रति पाण्डुलिपि पुस्तकालय-इलाहाबाद में वर्तमान है। पंडित सुमेरचंद्र द्वारा फारसी में सन् 1715 ई. में अनूदित पाण्डुलिपि राजा लाइब्रेरी रामपुर में है। वाल्मीकि रामायण की इस प्रति में बहुत से नयनाभिराम चित्र बने हैं। मुगलकालीन फारसी किताबों के अनुकरण पर यह प्रति उच्चकोटि की रंगीन सजावट से भरी हुई है। अभी हाल में इसका तीन भागों में प्रकाशन हुआ है।

(पृष्ठ 119-120)

वाणी प्रकाशन 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित 226 पृष्ठीय 495 रूपये मूल्य की यह कृति सबके लिए बहुउपयोगी है।

समाजशास्त्रीय बोल का उल्लेखनीय अमृतायाम

डॉ. रमानाथ त्रिपाठी के दृष्टिवान प्रधान संपादन में 'साहित्य एवं समाजशास्त्रीय बोध : विविध आयाम' नामक यह अभिनंदन ग्रंथ डॉ. सुन्दलाल कथूरिया के अमृत महोत्सव पर प्रकाशित किया गया है। डॉ. त्रिपाठी जैसे गुरु जो 92 वर्ष की उम्र लिए अब न अधिक देख पाते हैं, न ठीक से सुन पाते हैं और न मन को एकाग्र कर कुछ लिख-पढ़ पाते हैं, तब भी उन्होंने इस ग्रंथ की कार्य-योजना से लेकर संपादन तक के गुरुत्तर दायित्व का निर्वाह किया। ऐसी स्थिति में डॉ. कथूरिया जैसे शिष्य से अपने अन्योन्याश्रित संबंध का उपजीव्य यह ग्रंथ हिंदी साहित्य एवं समाजशास्त्रीय बोध के विविध आयामों का उत्कृष्ट अमृत-फल तथा अनिर्वचनीय शिखर-शंख ही बन पड़ा है। गुरु-शिष्य के संबंधों को अनावृत्त करते हुए त्रिपाठीजी ने प्रारंभ में स्पष्ट किया- 'जब हिन्दी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर सांध्य संस्थान में 1964 में मेरी नियुक्ति हुई तब कथूरियाजी मेरे शिष्य थे और जब मैं सेवानिवृत्त हुआ तब उनकी बेटी प्रतिभा मेरी शिष्या थी।' **(पृष्ठ 8)**

डॉ. कथूरिया विविध विषयों, विविध ग्रंथों, विविध आयामों तथा विविध सम्मानों एवं पुरस्कारों के प्रभूत एवं पुंजीभूत रचना-मालाओं के प्रथम

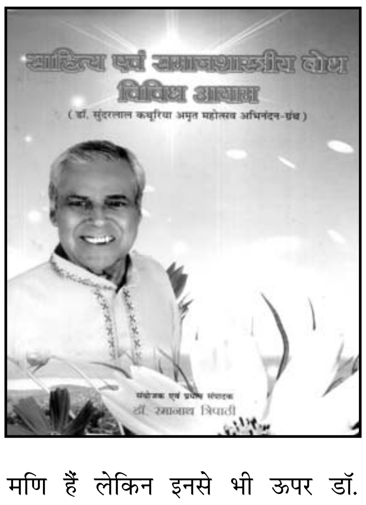

मणि हैं लेकिन इनसे भी ऊपर डॉ. रामनाथ त्रिपाठीजी की दृष्टि में- 'वे जिस स्वाभिमानी शौर्य प्रतिभा के धारक हैं, वे उन अनेकों से उच्च हैं जिन्होंने न किसी के आगे सिर झुकाया, न किसी के आगे हाथ पसारे और न किसी महंत की चरण-स्तुति की। छल-प्रपंच से रहित कथूरियाजी ने जुगाड़ भिड़ाकर कोई लाभ लेने का प्रयास नहीं किया। स्वाभिमानी स्वभाव के कारण उन्होंने बहुत कुछ खोया है जिसकी परवाह उन्हें बिल्कुल नहीं है।' डॉ. कथूरियाजी के शोध-क्षेत्र का विषय काव्य-शास्त्र रहा अत: यह ग्रंथ भी काव्य-शास्त्र पर आधारित है। बड़ी साइज के कुल 7 खंडों में सज्जित यह ग्रंथ शुभकामनाओं से प्रारंभ होकर साहित्य एवं समाजशास्त्रीय बोध के विविध आयामों को समेटता हुआ ख्यातनाम विद्वानों द्वारा डॉ. कथूरियाजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को विवेचित करता है। दस पृष्ठीय साक्षात्कार खंड में आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री द्वारा डॉ. कथूरियाजी से लिया गया साक्षात्कार है।

पांचवें खंड में डॉ. कथूरिया द्वारा लिखित गद्य एवं पद्य में आबद्ध रचनाएं संकलित हैं। छठा खंड डॉ. कथूरियाजी के प्रति व्यक्त काव्योद्गारों का है। इसी से जुड़ा सातवां खंड डॉ. कथूरिया की कविताओं का भारतीय भाषाओं में अनुवाद का दरसाव है। अंत में तीन परिशिष्ट क्रमश: साहित्य मनीषियों की दृष्टि में डॉ. कथूरिया, कथूरियाजी का संक्षिपत परिचय और चित्र परिधि को दिग्दर्शित करने वाले हैं।

अक्षय प्रकाशन 2/18 अंसारी रोड़, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित इस ग्रंथ का मूल्य 900 रूपये है। **-म.भा.**

पोथीखाना

कल्पकुंज : सौलह चित्रों का रंग वैविध्य

भारतीय चित्रकला में राजस्थान की चित्रकला की अलग से पहचान रही है। रियासत काल में विभिन्न रियासतों में वहां के शासकों ने

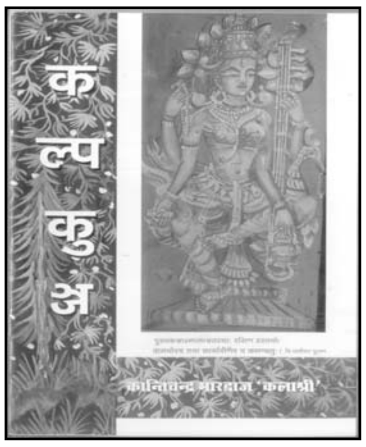

साहित्य संस्कृति कला के विकास के साथ-साथ चित्रकला में भी विशेष रुचि ली और चित्रकार चितेरों को भरपूर प्रोत्साहन दिया। यही कारण है कि यहां विभिन्न रियासतों की चित्रकला की विशेष शैलियां निखर आईं। इनमें नाथद्वारा, मेवाड़, कोटा, बूंदी, किशनगढ़, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, झालावाड़, अलवर, सवाई माधोपुर की चित्र शैलियां खासियत बनीं। इन शैलियों में लघु चित्र तथा भित्ति चित्रों की भरमार के साथ-साथ रामायण, महाभारत, गीता, पुराण, गीत गोविंद के अलावा नायिका भेदों, बारह मासों, रागमालाओं से संबंधित चित्र भी खूब बने। मंदिरों से जुड़े विभिन्न संप्रदायों में भी चित्रकला का पर्याप्त विकास हुआ इन सबका गहन अध्ययन कांतिचंद्र भरद्वाज ने किया और अपनी पैनी दृष्टि से चित्रकर्म की साधना प्रारंभ कर पिछले छह दशकों से अपनी पहचान धारदार किये हुए हैं।

कल्पकुंज में उनके द्वारा निर्मित 16 रंगचित्र इस बात के गवाह हैं कि प्रतिभावान कलाकार बहता पानी निर्मला बना रहकर सदैव गतिशील बना रहता है। अपने यात्रा-प्रवास में नदी की तरह ही चित्रकार कई राहों को पाटता हुआ अनेकानेक जिज्ञासु-मनों, विद्वानों, शोधत्सुकों तथा आम जनजीवन को तृप्त कर प्रकृतिजन्य सुरस का पान कराता हुआ रसिक बना रहता है। प्रारंभ में भूमिका लेखक रमेश वारिद ने कलाश्री भारद्वाज के चित्रकर्म पर प्रकाश डालते हुए उनके कलाकर्म को जीवन और इतिहास का प्रामाणिक दस्तावेज बताया। राजस्थानी संस्कृति के परिवेश से आबद्ध उनके चित्रों में महल, झरोखों, स्तंभों में राजपूतकालीन कलाशिल्पों की सौंदर्यमय अभिव्यक्ति उजागर हुई है।

ऋतु संहार प्रकाशन, 27 / 318, नीलकण्ठ महादेव के सामने, रेतवाली, कोटा से प्रकाशित यह कृति सौ रूपये मूल्य वाली है।

कर्मशील कलासर्जक की कलायात्रा का दरसाव

डॉ. राधाकृष्ण वशिष्ठ कई विशेषताओं में उल्लेखनीय तो इसी से बन जाते हैं कि वे राजस्थान की चित्रकला जैसे विषय में प्रथम पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त संधानकर्ता हैं और डि.लिट् की उपाधि का श्रेय भी

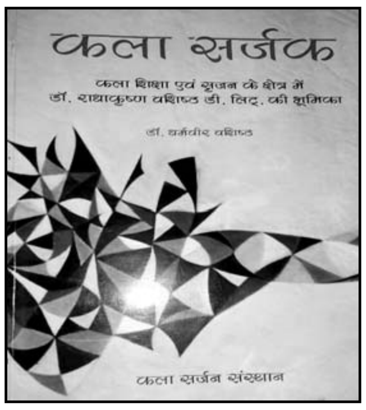

उन्हें राज्य का प्रथम विशिष्ट व्यक्ति बनाने का परचम देता है।

डॉ. वशिष्ठ प्रारंभ से ही होनहार तथा अध्ययनजीवी रहे। सन् 1966 में उन्होंने चित्रकला में एम.ए. भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर अपने शोधकार्य में डूबे मन की दिलचस्पी लेकर 1973 में पीएच.डी. और 93 में डि.लिट् की।

वे राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से सेवानिवृत्त होकर निरन्तर अध्ययनशील बने हुए हैं। उन्होंने अपने निर्देशन में दो दर्जन छात्रों को पीएच.डी. करा दी। इनमें से एक गर्वशीला में भी हूं।

राजस्थान की चित्रकला, उसके इतिहास, विकास के सोपान, पारम्परिक कलाधर्मिता, कलासर्जक और उनकी देन को लेकर डॉ. वशिष्ठ ने लगातार और प्रामाणिक शोध के साथ गहरा अध्ययन किया है।

इस संबंधी उनकी हिन्दी और अंग्रेजी में अच्छी उम्दा पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'कलासर्जक' नाम से आर्ट पेपर पर प्रकाशित यह ग्रंथ कलाशिक्षा एवं सृजन के क्षेत्र में डॉ. वशिष्ठ की भूमिका का सबरंग दर्शन है जो उनके समानधर्मी सुपुत्र डॉ. धर्मवीर वशिष्ठ द्वारा संयोजित है।

एक प्रकार से यह डॉ. राधाकृष्ण की समग्र उपलब्धियों का दिग्दर्शन है जो छह अध्यायों में उनके प्रारंभ से लेकर कलाशिक्षा के विविध चरण, उनकी कृतियों का तकनीकी आधार, शोधक्षेत्रीय उनका रचनात्मक योगदान, नवीन संदर्भों में उनका दृष्टि-विस्तार तथा उन्हें प्राप्त सम्मानों, पुरस्कारों के साथ उनके कार्यों संबंधी विद्वानों के मंतव्य, समीक्षा टीप्पण का लेखाजोखा देते हैं। जितने पृष्ठों में यह सामग्री गुंफित है उतने ही पृष्ठों में उनसे संबंधित परिशिष्ट में दी गई सामग्री उनकी ऊर्जापूर्ण उपलब्धि और प्रकाशन-निर्देशन का ब्यौरा है।

कुल 108 पृष्ठों की यह सामग्री 550 रूपया कीमती है। इसका प्रकाशन उदयपुर के कलासर्जक संस्थान एवं हिमांशु पब्लिकेशंस से हुआ है।

-डॉ. कहानी भानावत

भीमा के चित्र : कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा

उदयपुर से मैं, भगवान कच्छावा तथा दिल्ली की इन्दिरा मुखर्जी तीनों नाई से सटे छोटी ऊंदरी गांव पहुंचे। पहले भी भगवानजी और मैं कईबार वहां जा चुके हैं। पूरा गांव आदिमगंधी संस्कृति-सरोकारों का है। दो अगस्त 2006 का प्रातः का समय था। हम सीधे फूला पारगी के घर पहुंचे। फूला ही नहीं, उनकी पत्नी चंपा, पुत्री जीवी, पुत्र धूला तथा बंशी तथा धूला की पत्नी पेमा सभी चित्रकारी में उस्ताद हैं। फूला ने बताया कि उनके परदादा उमा का पौत्र गोमा तथा गोमा का पुत्र भीमा भी अपने पिता की राह पकड़े अच्छी चित्रकारी करता है।

परिचय का दायरा बढ़ा तो गोमा-पुत्र भीमा पास ही बैठा हुआ था। फूला-परिवार से मिलते वक्त वह भी हमारे साथ था। हमें लगा कि भीमा अपने चित्र दिखाने के लिए उत्साहजनित उत्सुकता लिए है। इशारा पाते ही वह अपने चित्रों का पिंडावड़ा ले आया। भगवानजी को लगा कि पहले जैसी मुखरता इसबार खामोशी लिए है।

पूछने पर फूला ने बताया कि गोमा भाई नहीं रहे। पिछले दाड़े 23 जुलाई को उनका अन्तकाल हो गया। हमने उनकी भेंट को याद करते उनकी चित्रकारी को सराहा और आत्मीय सहानुभूति व्यक्त की। इन्दिराजी का तो गला ही भर आया। काश ! वे भी कुछ पहले आतीं तो उनसे भेंट कर उनकी चित्रकला के साथ अपनी समझ-संपदा को समृद्ध कर पातीं।

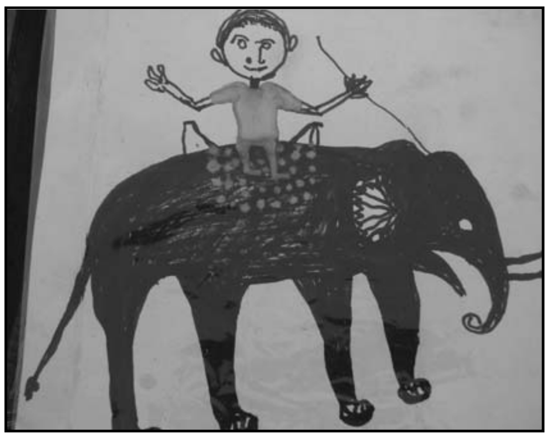

भीमा ने सबसे पहले उसके द्वारा बनाया हाथी दिखाया। दिखता-दिखाता तो वह हाथी ही था पर उसके पीछे का हिस्सा घोड़े का था। पूंछ भी घोड़े जैसी चंवरदार थी। चूहे के चित्र को उसने खरगोश बताया। उसके पांव बकरी के फटे खुर जैसे थे। बकरी के चित्र में उसका मुंह खरगोश का लग रहा था। एक सियार ऐसा बनाया जिसकी पूंछ जमीन को छू रही थी तथा पेट फूला हुआ था। शेर उसकी शिकार के लिए झपट्टा मारे पीछे लपक रहा था।

भीमा ने एक दूसरा हाथी और बताया जिसका सिर कपड़े से ढका हुआ था। हाथी के दोनों कान हाथी के नहीं होकर एक कान बकरी जैसा तथा दूसरा भेड़ का लग रहा था। उसकी सूंड का आखिरी सिरा दो फाड़ लिए था।

इसी प्रकार गधे का चित्र पीछे से तो गधे जैसा ही था किंतु आगे वाला हिस्सा बकरी जैसी शक्ल लिए था। मोर नाचता

हुआ था पर उसके पंख लम्बे नहीं होकर छोटे-छोटे गुच्छे में थे साथ ही उसका मुंह बतख जैसा था।

यही नहीं, मोर की चोंच ऐसी लग रही थी जैसे चिड़िया की हो। जाहिर है, ऐसे चित्र हमने पहले कभी नहीं देखे थे और न किसी से सुना ही था।

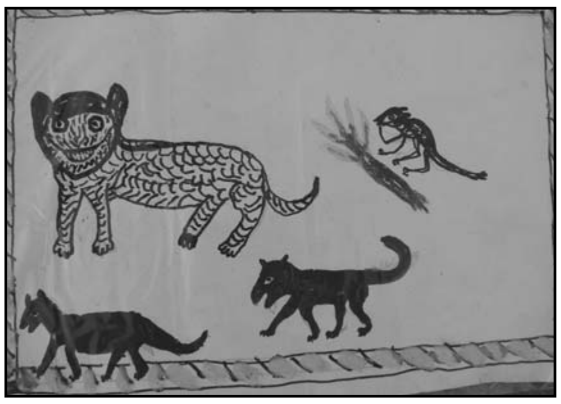

फूला को पूछा तो वे कोई उत्तर नहीं दे पाये फिर हमने भीमा से ही जानना चाहा तो बोला कि एकबार मेरे पिताजी ने मुझे कहा था- जो भी चित्र बनाओ, हूबहू वैसी शक्ल-सूरत का मत बनाना। अपनी कल्पना तथा समझदारी से ऐसा बदलना कि वह भौंडा भी न लगे और एक चित्र को देखकर दूसरे चित्र का हुलिया आंखों में तैरने लगे।

हमने पूछा कि तुम्हारे चित्रों में एक भी चित्र ऐसा नहीं जो सचमुच का लग रहा हो। वह बोला- मुझे भी नहीं लग रहा पर मैंने जो भी कलपना दी वह गप्प वाली नहीं। रात दिन जो कुछ अपने घर-परिवार, गांव-खेत में देख-सुन रहा हूं, उसे जोड़ा-घटाया है। पिताजी ने क्यों कहा, मुझे नहीं पता पर तब मैं बहुत छोटा था सो या तो सचमुच के जानवर नहीं बना सकता होऊंगा या फिर मेरे बनाने को किसी की नजर, कुदृष्टि नहीं लग जाय, यह सोचा होगा।

मैं सोचता रहा, यह भी चित्रकार की सफलता ही है कि जिसका चित्र बनाया वह तो वैसा लग ही रहा पर प्रकारान्तर से अन्य भी उसके साथ याद हो आयें, यह भी उसका कौशल तथा सृजन-शक्ति का कमाल ही है। **-म.भा.**

ओला और एनएसीओ में साझेदारी

उदयपुर। परिवहन के लिए भारत के सबसे लोकप्रिय मोबाइल ऐप ओला ने राज्य में हज़ारों ड्राइवर साझेदारों को एड्स के बारे में जागरूक बनाने तथा परामर्श सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए नेशनल एड्स कन्ट्रोल ओर्गेनाइज़ेशन (एनएसीओ) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इसके अलावा ओला ने अनौपचारिक कर्मचारियों तक एड्स / एचआईवी की रोकथाम एवं देखभाल कार्यक्रमों के फायदे पहुंचाने के लिए एम्प्लॉयर लैड मॉडल को अंजाम देने हेतु राजस्थान राज्य एड्स नियन्त्रण सोसाइटी (एसएसीएस) के साथ भी साझेदारी की है। ओला में राजस्थान के बिजनेस हैड किरण ब्रह्मा ने कहा कि ओला समुदाय को कुछ देने में विश्वास रखती है। अपने प्लेटफॉर्म पर सैंकड़ों हज़ारों ड्राइवरों के साथ ज़रूरी है कि हम एनएसीओ और (एसएसीएस) जैसे संगठनों के साथ हाथ मिलाएं और एचआईवी/एड्स की महामारी से लड़ने के लिए सामुहिक प्रयास करें। भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम ने एक बार अपने भाषण में कहा था कि भारत को एचआईवी मुक्त बनाना उनका सपना है; यह साझेदारी इसी दिशा में हमारा एक कदम है। भविष्य में भी हम राजस्थान एवं देश के शेष हिस्सों में हमारे ड्राइवर साझेदारों के लिए इस तरह की समग्र शिक्षा और परामर्श सेवाओं का संचालन करते रहेंगे।

500 रुपये के पुराने नोट से टॉपअप भुगतान जारी रखने पर मोदी सरकार को धन्यवाद

उदयपुर। सेल्युलर ऑपरेटर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (सीओएआई) ने प्रीपेड मोबाइल रिचार्ज के लिए पुराने 500 रुपये नोट के उपयोग की अनुमति देने संबन्धी फैसले के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का धन्यवाद किया है। इससे ग्राहकों को निरंतर संचार सेवा के उपयोग की अनुमति मिलेगी।

सीओएआई के महानिदेशक राजन मैथ्यूज ने कहा कि हमें खुशी है कि सरकार ने हमारे अनुरोध को स्वीकार करते हुए उपभोक्ताओं के हितों को तरजीह दी ताकि ग्राहक टॉप-अप रिचार्ज करा सके। आवश्यक सेवा के तौर पर मोबाइल फोन सेवा का उपयोग कर सके। सीओएआई इस ऐतिहासिक कदम पर प्रधानमंत्री को एक बहुत ही संवेदनशील सरकार चलाने के लिए बधाई व धन्यवाद देता है। प्रारंभिक समस्याओं के बावजूद, विमुद्रीकरण व्यापक रूप से देश को लाभ पहुंचाएगा। इससे डिजिटल लेनदेन बढ़ेगा, पारदर्शिता को बढ़ावा मिलेगा, कर संग्रह बढ़ाने और सामाजिक समानता सुनिश्चित करने में लाभ मिलेगा। सीओएआई आगे भी पूरी तरह से सशक्त भारत सरकार के विजन को आगे बढ़ाने में सरकार के साथ मिलकर काम करने के लिए प्रतिबद्ध है।

जिंक को 'एक्सीलेन्स अवार्ड'

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक की इकाई सेन्ट्रल रिसर्च एण्ड डवलपमेंट लेबोरेट्री (सीआरडीएल) एवं रामपुरा-आगुचा खदान को 'एक्सीलेन्स अवार्ड' कार्य स्थलों पर गुणवत्ता एवं उत्कृष्ट प्रबन्धन के लिए प्रदान किया गया।

यह पुरस्कार क्वालिटी सर्किल फोरम ऑफ इण्डिया द्वारा मुम्बई में 5-एस पर आयोजित चतुर्थ नेशनल कान्क्लेव में प्रदान किया गया। पुरस्कार जिंक की ओर से भावना प्रजापति, सी.आर.डी.एल. एवं रामपुरा-आगुचा खान से महेन्द्र सुथार एवं मानवेन्द्र घोष ने ग्रहण किया।

हिन्दुस्तान जिंक के हेड-कोर्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि यह पुरस्कार हिन्दुस्तान जिंक की इकाइयों में कार्य स्थलों पर उत्कृष्ट प्रबन्धन के लिए उठाये गये प्रभावी उपायों की मान्यता है।

वोडाफोन का बड़ा डेटा छोटा प्राइस लांच

उदयपुर। भारत के सबसे बड़े दूरसंचार सेवा प्रदाताओं में से एक वोडाफोन ने बड़ा डेटा छोटा प्राइस लॉन्च किया है। कम कीमत के मासिक डेटा पैक्स की इस सीरीज़ की कीमत 24 रुपये से शुरू होती है और यह 30 दिन की वैलिडिटी के साथ उपलब्ध है। पैक की कीमत सर्कल के अनुसार अलग-अलग है। वोडाफोन इण्डिया के चीफ कॉमर्शियल ऑफिसर संदीप कटारिया ने कहा कि हम उपभोक्ताओं के लिए डेटा को किफ़ायती एवं सुलभ बनाना चाहते हैं। यह कदम पहली बार ऑनलाईन आने वाले उपयोगकर्ताओं को डेटा के इस्तेमाल के लिए प्रोत्साहित करेगा। हमें विश्वास है कि हमारे बड़ा डेटा छोटा प्राइस पैक द्वारा लाखों उपभोक्ता पूरे महीने इंटरनेट के साथ कनेक्टेड रहकर डेटा का लुत्फ़ उठा सकेंगे। यह डेटा के इस्तेमाल को बेहतर बनाकर देश की डिजिटल अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

विश्व एड्स दिवस पर रैली आयोजित

उदयपुर। विश्व एड्स दिवस पर शहर में कई आयोजनों द्वारा आमजन को जागरूकता का संदेश दिया गया। सांई तिरुपति विश्वविद्यालय में मेडिकल छात्रों ने केंडल मार्च द्वारा आमजन को एड्स के सम्बंध में जागरूक कर बचने की प्रेरणा दी। विश्वविद्यालय के चैयरमेन आशीष अग्रवाल की अगुवाई में एमबीबीएस के सभी छात्रों ने हाथों में केंडल जलाकर विवि से पेसेफिक इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज तक मार्च किया। समारोह को चैयरमेन आशीष अग्रवाल, कॉलेज के डीन डॉ ए. पी. गुप्ता तथा प्रो. रामकुमार सिंघल ने सम्बोधित किया।

सापेटिया ग्राम पंचायत में तिरुपति स्कूल और कॉलेज ऑफ नर्सिंग द्वारा आमजन को एड्स के बारे में जागरूक करने के लिए जागरूकता रैली निकाली गई। पेसिफिक मेडिकल विश्वविद्यालय के तत्वावधान में आयोजित इस रैली को संस्थान के प्राचार्य डॉ. शिव कुमार मुद्गल ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली के दौरान सभी विद्यार्थियों को शपथ दिलाई गई कि वे इस बीमारी के बारे में ज्यादा से ज्यादा लोगों को जागरूक करेंगे। इस अवसर पर वाईस प्रिंसिपल दिगपाल सिंह चुंडावत, सह प्राध्यापक हरीश कुमावत, हरिबाला पालीवाल,प्राध्यापक संजय नागदा, रश्मि राज, पंकज सिंह, चंदा सोनी एवं अंकिता रिचर्ड मौजूद थे।

कान्यो मान्यो

वगत वायरो है

कान्यो इस बार जल्दी में तो नहीं था पर फुर्सत में भी नहीं था सो बोला कि सूत्र रूप में समझले मान्यो कि वगत माने समय वायरो माने हवा माफिक है। कब क्या हो जाय, कुछ पता नहीं चलता। मान्यो उसकी बात सुन हां-हूं करता रहा पर मन ही मन सोचता रहा कि कान्यो की बात में वजन है। केई वगत पतोई नी चाले ने मौसम बिगड़ जावे तो डूंज वायरो अस्यो चाले के पतरड़ा भी उखड़ ने हनुमानजी ज्यूं उड़वा लाग जावे। कदीकदाक तो या डूंज पानी की तरह गैरी चकरी खाय भुताल्यो बण जावे जदी आदमी वणी में गोतो खा आपणी जान तक गंवा दे।

मान्यो बोल्यो- पहले पंखेरू मिल बैठ चौपाल माथे भविष्य रो बखान करता जदी बड़ेरे कहते- कहानी तो कागला कहता कथावाचक बन और हुंकारा वागला भरता। कौआ और वागर यानी चमगादड़ उल्टा लटक अपनी गोगड़ी, गर्दन हिलाता रहता। उसे इतना रस आता कि झूलता रहता। अब कागला और वागला दोनों दुर्लभ हो गये हैं तो सुन। कान्यो ने हुंकारा भरा।

मान्यो ने शुरू किया- इस बार बरसात इतनी हुई कि खाड़ा खोजरा ही नहीं, ताल-तलैया, खाडा-नाला, सरवर-समंदर सब भर गये। पुरखा समझदार थे। कहते कि कलपना में छोटापन मत रखो। बड़ा सपना देखो। बड़ी बातें करो और बड़प्पन रखो सो उन्होंने तालाब बनवाये तो भी उनका नाम समंदर रखा। उदैपुर का फतहसागर, उदयसागर, थोड़ी दूर एक ओर जयसमंद, दूजी ओर राजसमंद। ये सब समंद नहीं हैं पर हमारी आंखों के, हमारे हिये के, हमारी खुशियों के अकूत भंडार हैं। अक्षय निधि हैं। इस बार सब भर गये। सबके रपट चल गई। ओटा लग गया। छलक-छलक ओवरफ्लो हो गये। वो भी एक बार नहीं, दो-दो, तीन-तीन बार। कान्यो बोला- वगत वायरो है। इस बार जो वायरा चला, उसमें कहीं खोट नहीं दीखी।

मान्यो बोला- सो तो ठीक है पर जब बरखा अधिक होती है तो ठंड भी अधिक पड़ती है। इस बार तो गरमी भी तेजी में रही। तीनों रितुएं जब एक जैसा तेवर दिखायेंगी तो उसे ठीक कैसे कहेंगे। अधिक तेजी में मांदगी बढ़ जाती है। कई बीमारियों का पता ही नहीं चलता। समै पर चेत गये और डागडर मिल गया तो इलाज लग गया। गांवों में तो मांदगी में भी मरीज सोया ही घर गस्सेल बना रहता है। डागडर वहां कहां और फिर दवाई नहीं। दवाई मिले तो उसके लिए पैसे नहीं। सो कभी-कभी हवा ही ऐसी चलती है कि मौत पर मौत होती रहती है जैसे भेड़ें भागती हैं। जैसे नील गायें भागती हैं। जैसे हरिण भागते हैं। इन्हें भागते वगत यह ध्यान नहीं रहता कि किधर कैसे भागते हुए अपने को बचाना है। अंधी दौड़ में ये जनावर एक-दूसरे पर ही गिरते हुए अपनी जान गंवा बैठते हैं।

कान्यो चुपचाप सुनता रहा। गिरगिट की तरह गर्दन भी हिलाता रहा। अंत में बोला- वगत वायरो है लाला।

जिंक 'सैप ऐस अवार्ड' से सम्मानित

उदयपुर। वेदान्ता समूह की जस्ता-सीसा एवं चांदी उत्पादक कंपनी हिन्दुस्तान जिंक को 'एम.आई.आई. प्रोजेक्ट' के लिए सैप ऐस अवार्ड-2016 से सम्मानित किया गया है। यह अवार्ड सैप इण्डिया द्वारा आयोजित एक भव्य समारोह में हिन्दुस्तान जिंक की ओर से हेड-इन्फॉरमेशन टेक्नोलॉजी चेतन त्रिवेदी ने ग्रहण किया। इस अवसर पर श्री त्रिवेदी को व्यक्तिगत श्रेणी में 'आई.टी. पर्सन ऑफ द ईयर' से भी सम्मानित किया गया। हिन्दुस्तान जिंक के हेड-कार्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि वेदान्ता समूह की कंपनी हिन्दुस्तान जिंक एवं अन्य सभी कंपनियों में एच.आर. एक्टीविटिज, वित्तीय लेखा-जोखा तथा प्रोडक्शन डेटा तथा अन्य सभी कार्यालय कार्य सेप प्रणाली के माध्यम से संचालित तथा सम्पन्न किये जाते हैं।

अशोक को मिला नारायण कृत्रिम पांव

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान में मोटा कठिया गांव जिला अमरेली राजकोट निवासी अशोक कांतिलाल को नारायण कृत्रिम पांव के द्वारा नया जीवन मिला है।

अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि वर्ष 2005 में सड़क हादसे में अशोक अपना दायां पैर घुटने के ऊपर तक गंवा चुका था। इस विकट परिस्थिती में पिता और भाई ने भी साथ छोड़ दिया तब भुआ की लड़की ने आर्थिक मदद कर इन्हें उदयपुर पहुंचाया। नारायण सेवा संस्थान में वे निदेशक वन्दना अग्रवाल से मिले।

इस पर डॉ. मानस रंजन साहू द्वारा अशोक को नि:शुल्क कृत्रिम नारायण पैर लगाया गया। इसकी वजह से अशोक पुन: चलने-फिरने और अपने दैनिक कार्य करने में सक्षम हो गए हैं। अशोक ने ज़िन्दगी में हुए इस बदलाव के लिए ईश्वर का शुक्रिया किया।

गट्या महाराज

नानी थड़ी के गट्या महाराज
दोस्तों के बीच कभी मिल जाते तो खुश होते।
उनके श्वेत होठ हल्की सी हिलोर देते
जैसे मकई के पत्ते पर डुस्की हींडा हींड रही हो।
वे खरी दुपहरी में पोस्ट ऑफिस की डाक
रेल्वे स्टेशन पहुंचाने और बेग लाने की नौकरी बजाते।
कभी-कभी उनके कंधों पर लटका बेग
ठेठ पांवों तक भर जाता
तब वे पसीने से लथपथ हो जाते
और उनकी चाल छोटे डग में बड़ी छलांग भरती
अब्दुल दादा के तांगे से भी तेज हो जाती।
गुटुर मुटुर गट्या महाराज
घूघरों की छमछमाहट की हवा खाते
हनुमानजी की तरह बलवंत लगते।
उनकी ललाट पर
तीन अंगुलियों की आड़ी चंदनी रेखाएं
प्रतिदिन उनके भाग्य को नया रूप देती।
टीपणा देखे बिना
हाथ की अंगुलियों पर टोपे गिनते
छोटे-मोटे मुहूर्त निकाल देते।
रवि को रोटला देव
सोम को सुखदाताजी
मंगल को बजरंगबली तेरी नाव चली
बुध को सुध देते गोबर गणेश
शुक्र को सुनसान पाड़ा के राड़ा
शनि को धनी देव तेल का खेल
सबको वे बारी-बारी से
हाथ जोड़ मान मोड़
धोके बिना चोके नहीं चढ़ते।
एक छोटे से डागले पर
खांखरे के पत्तों से छाया उनका झूंपा
वे छपाक-छपाक चढ़ जाते।
नारियल की जटाओं से बुने रस्से के सहारे
कुंवारी ईंटों के दो-दो सेट
तीन दिशाओं से सटाकर
खड़ा कर दिया गट्या महाराज का चूल्हा
इन्हीं ईंटों का सहारा बन जाता
उनका तकिया ललाम।
गांव में कोई त्यौहार उत्सव
अनुष्ठान आयोजन प्रयोजन हो
गट्या महाराज को अवश्य नूता जाता।
उनके तन पर जनेऊ, सिर पर चोटी
और कमर में बंधी घुटनों से ऊंची धोती
नपा तुला जीवन।
वे दो रोटले खाते
जिस दिन उन्हें चूल्हा जलाना पड़ता
वे उतना ही आटा मांगकर लाते।
बस्ती का कोई भी घर
उनके आने का शकुन मानता।
वे घर के बाहर जाकर
'आनंद है' का उच्चारण करते
और एक पांव के घुटने के बल
दूसरा पांव टिकाये खड़े हो जाते।
अधिकतर छोटे बच्चे
अपनी मुट्ठी या फिर धोबे में
आटा लेकर उनके अमरत्ये में डाल देते।
संजीवनी के रूप में बच्चे उनसे
'इसकूल जाओ धनाधन, विद्या पावो दनादन'
का आशीर्वाद पा निहाल हो जाते।
अब वैसा गांव नहीं रहा
अच्छा ही रहा
गट्या महाराज भी बैकुंठी चले गये।

कौन यह सब लिख गया

-डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ-

दीप कम्पित क्यों
अचानक यह हुआ
कौन गुजरा दर्द की
सूनी डगर से
कौन यह सब लिख गया
मेरी कलम से?
वो शिखंडी रोशनी,
जब तक हमको छलेगी
धूसरित सबके प्रभामण्डल करेगी
याचना का आर्त क्रन्दन
स्वरलिपि की धुन बनेगी
तब तलक ना भोर का सूरज उगेगा
रोशनी के छन्द कोई क्या रचेगा!
सोचकर ये मन
प्रकम्पित क्यों हुआ
कौन निकला चीख
बन काली भंवर से
कौन यह सब लिख गया
मेरी कलम से?
वो शिखंडी रोशनी,
जब तलक हमको छलेगी
धधकते उस सूर्य को बूढ़ा करेगी
यक्ष प्रश्नों के शेरों से
जिन्दगी सबकी बिन्धेगी
तब तलक ना जोर
दीपक का चलेगा
खूशबुओं के छन्द
कोई क्या रचेगा
सोचकर ये प्राण कम्पित क्यों हुआ
कौन गुजरा नेह की निर्मम गली से
कौन यह सब लिख गया
मेरी कलम से?

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-

उदयपुर में ऐतिहासिक प्रताप गौरव केंद्र का लोकार्पण
शिवाजी ने भी प्रताप से सुशासन की प्रेरणा ली : भागवत

-डॉ. तुक्तक भानावत-

उदयपुर। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) के सर संघचालक मोहन भागवत ने यहां टाइगर हिल पर बने महाराणा प्रताप गौरव केंद्र का उद्घाटन किया और कहा कि प्रताप से ही शिवाजी ने सुशासन की प्रेरणा लेकर राजकाज का संचालन किया था।

श्री भागवत ने कहा कि यह पहला ऐसा गौरव स्थल है जहां मुझे शिलान्यास करने के थोड़े समय बाद ही लोकार्पित करने का अवसर मिला। महाराणा प्रताप अपने पराक्रम, त्याग, युद्धनीति और शासन-संचालन की दृष्टि से ऐसे इतिहास पुरूष हो गये हैं जिनकी तुलना किसी अन्य विश्व-पुरूष से नहीं की जा सकती। श्री भागवत ने कहा कि महाराणा प्रताप की कार्यप्रणाली और जनसहयोग के बल पर लोकप्रियता अर्जित करने जैसा उदाहरण इतिहास में कहीं नहीं मिलेगा। उनसे यह प्रेरणा मिलती है कि अंतिम विजय सत्य और सत्व की होती है। सौ बार असत्य बोलने से सत्य की प्रतीति तो होने लगती है किंतु अंततोगत्वा उसकी चमक खोती हुई असत्य के रूप में ही फलित होती है। जहां धर्म है वहां कर्तव्य के खातिर देश के लिए समर्पण और मर मिटने की भावना होती है। प्रताप ने यह बता दिया कि विपरीत परिस्थितियों से लड़कर कैसे समाज को सबल और समर्थ बनाया जा सकता है और किस प्रकार देश की स्वतंत्रता के लक्ष्य पर विजय का शंखनाद किया जा सकता है।

पर्यटन मंत्री द्वारा हेरिटेज सर्किट के लिए 100 करोड़ की घोषणा

केंद्रीय पर्यटन मंत्री महेश शर्मा ने अपना उद्बोधन ''देश हमें देता है सबकुछ, हम भी कुछ देना सीखें'' जैसी राष्ट्रभक्ति की उदात्त मनसा की समर्पिति के आह्वान से प्रारंभ किया और कहा कि मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे प्रति क्षण ही राजस्थान को नई उंचाइयों पर ले जाने के सपनों को सार्थक करने की भावना लिए काम कर रही हैं। मेवाड़ में महाराणा उदयसिंह से लेकर कुंभा, सांगा, राजसिंह, जयसिंह, पद्मावती, पन्नाधाय, चेतक और भामाशाह जैसे और भी नाम हैं जो पूरे विश्व की मानवता के लिए प्रेरणा के प्रकाश स्तंभ हैं। मैं स्वयं भी इसी धरती का जाया हूं। अत: इस धरती को कुछ करने का संकल्प धारे प्रणाम करता हूं।

महेश शर्मा ने कहा कि सर संघचालक भागवतजी की हार्दिक इच्छा है कि यह प्रतिष्ठान पूरे विश्व में त्याग, शक्ति, भक्ति, शौर्य और पराक्रम की पहचान बने। इसकी समृद्ध धरोहर विश्व के प्रत्येक जन में चेतना का संचार करे। इसके लिए यह प्रयास होना चाहिए कि यहां उदयपुर से लेकर भामाशाह तक की पराक्रम गाथाओं को जीवंत करने वाला एक भव्य म्युजियम बने। इस हेतु यदि राज्य सरकार संस्तुति कर दे तो लाइट एंड साउंड शो के लिए केन्द्र सरकार 20 करोड़ रूपये का अनुदान देगी। उन्होंने यह भी कहा कि सर संघचालकजी ने मुझे आदेश दिया कि यहां ऐसा कोई हेरिटेज सर्किट बनाया जाय जिससे पूरे विश्व को भारतीयता की शक्तिवंत परंपरा और यहां के पराक्रमशील महामानवों की जीवंत गाथाओं से रूबरू होने का अलभ्य अवसर हाथ लगे। मैं उनके आदेश की अनुपालना करते हुए महाराणा प्रताप हेरिटेज सर्किट के नाम से 100 करोड़ रूपये की राशि प्रदान करने की घोषणा करता हूं।

समारोह में क्षेत्रीय संघ चालक भगवतीप्रसाद शर्मा, जल संसाधन मंत्री किरण माहेश्वरी, माध्यमिक शिक्षा एवं भाषा विभागीय राज्यमंत्री वासुदेव देवनानी, वन पर्यावरण एवं खान मंत्री राजकुमार रिणवा, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अरूण चतुर्वेदी, गो पालन एवं देवस्थान मंत्री ओटाराम देवासी, भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष अशोक परनामी, महाराणा प्रताप गौरव केन्द्र समिति अध्यक्ष डॉ. के एस गुप्ता, महामंत्री मदनमोहन टांक, डॉ. देव कोठारी सहित क्षेत्रीय विधायक, सांसद मौजूद थे। प्रताप गौरव केंद्र 9 दिसंबर से आम जनता के लिए खुलेगा। इसे देखने का शुल्क 100 रु. निर्धारित किया गया है।

स्वाधीनता और समर्पण का जीवंत स्मारक जन-जन के लिए प्रेरक : वसुंधरा राजे

मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने प्रताप गौरव केन्द्र की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुए कहा कि उदयपुर में यह वर्ल्डक्लास चीज बनी है। कोई चाहे हेलीकॉप्टर में हो या प्लेन में उसे महाराणा प्रताप की अष्टधातु की 57 फीट ऊंची प्रतिमा के दर्शन हो जाते हैं। यह केन्द्र उदयपुर आने वाले पर्यटकों के लिए अद्भुत होगा और उन्हें दुनिया से हट कर एक नई चीज देखने को मिलेगी। इतना भव्य केन्द्र बनाने में लोगों ने अपने-अपने हिसाब से आहूतियां दी हैं।

दुनिया में कहीं भी राजस्थान का नाम लिया जाता है तब महाराणा प्रताप का नाम तो अपने आप ही जुड़ जाता है। इस केन्द्र के माध्यम से युवा पीढ़ी पुराने इतिहास से जुड़ेगी। उन्होंने कहा कि यह केन्द्र आपस में एकता का सन्देश भी देता है। इसे देख कर जीवन में हर किसी में स्वाभिमान और राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना भी पैदा होगी।

मुख्यमंत्री ने आम जन से आह्वान किया कि हर व्यक्ति पेड़ जरूर लगाएं। खासकर बेटियों के पिता अपनी बेटी के नाम से 11-11 पेड़ लगाएं ओर उनका नाम भी अपनी बेटियों के नाम पर ही रखें। यही काम अपने पिता के नाम से पेड़ लगाकर भी किया जा सकता है। जल स्वालम्बन अभियान की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि पूर्व में राजस्थान के 25 ब्लॉक पानी के अभाव में डार्क जोन में थे लेकिन आज 50 ब्लॉक इससे बाहर निकल चुके हैं जहां पानी की कोई कमी नहीं है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कोई भी युवा पीढ़ी या समाज अपने क्षेत्र के लोकदेवी-देवताओं और वहां का इतिहास जाने बगैर आगे नहीं बढ़ सकता। राजस्थान में हर समाज और क्षेत्र को पहचान देने वाले ऐसे अगणित लोकदेवी-देवताओं के मन्दिर और मूर्तियां स्थापित की जा रही हैं जिनमें लोगों की अटूट आस्थाएं हैं। ऐसे सभी जिलों में कई जगहों पर कार्य प्रारंभ हो गये हैं। कई प्रमुख मन्दिरों का विकास और जीर्णोद्धार भी करवाया जा रहा है जिसमें श्रीनाथजी, चारभुजानाथ, खाटूश्यामजी, मेंहदीपुर बालाजी जैसे प्रमुख मन्दिर शामिल हैं।

गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि 35 करोड़ में यह गौरव केन्द्र तैयार हुआ है। इसकी समग्र लागत 100 करोड़ की होगी जब यह पूरा बन कर तैयार हो जायेगा। इसके लिए तहसील और पंचायत स्तर पर जिसने जितना भी अर्थदान दिया, हमने स्वीकारा है। हजारों साधारण व्यक्तियों और कार्यकर्ताओं ने अपनी क्षमता के अनुसार इस यज्ञ में अपनी आहूति दी है। सरकार से हमने कोई सहयोग नहीं लिया है किंतु विभिन्न विभागों द्वारा सड़क और पानी जैसी सुविधाएं सुलभ कराई हैं। इस परिसर में हेलीपेड की जगह है। इसके लिए हम उम्मीद करते हैं कि यहां हेलीपेड बने ताकि हवाई यात्री देश-विदेश से सुगमतापूर्वक यहां आ सके। अभी जो कमी लग रही है वह पार्किंग की व्यवस्था की है। आने वाले समय में इसकी प्राथमिक तौर पर आवश्यकता महसूस होगी सो इस ओर हमारा प्रयत्न अपेक्षित हैं।

प्रताप गौरव केन्द्र के निदेशक ओमप्रकाश ने केन्द्र की कार्ययोजनाओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इसमें मेवाड़ के 29 महापुरुषों की मूर्तियां लगाई गई हैं। प्रमुख रूप से बप्पा रावल, महाराणा कुंभा, महाराणा सांगा, महारानी पद्मिनी, मीराबाई, पन्नाधाय, उदयसिंह, भीलू राणा पूंजा, भामाशाह, महाराणा प्रताप, हकीम खां सूर, झाला मन्ना, रक्ततलाई, मायरा की गुफा, चेतक, गोगुन्दा, चेतक स्मारक, हल्दीघाटी, मचींद आदि शामिल हैं।

समारोह में प्रताप गौरव केन्द्र को बनाने में योगदान देने वाले लक्ष्मण व्यास, संजू भाई, जयेश भाई, जितेन्द्र भाई, हार्दिक भाई, रामनरेश, मंदीप-संदीप भाई एवं बागवान नौजीराम को उपरणा एवं प्रशस्तिपत्र देकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ भारत माता की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन से हुआ।

वह निडर शेर दहकती दहाड़ और भयाक्रांत जानवर........

अपने उद्बोधन में मोहन भागवत ने एक कहानी के माध्यम से प्रताप के शौर्य को रेखांकित तो किया ही लेकिन प्रकारान्तर से देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के एकछत्र प्रभाव और कार्यप्रणाली की प्रशंसा कर उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व की भी पीठ थपथपाई। कहानी तो बकरियों के बीच पले एक जंगली शेर, एक गडरिये और बकरियों के झुंड की थी मगर प्रतीकात्मक रूप में बड़ी बेबाकी से उन्होंने देश के स्वाभिमान तथा नरेन्द्र मोदी की धारदार ताकत का एहसास करा दिया।

भागवत की कहानी का छिपा रहस्य जब खुलता पाया गया तो स्पष्ट था, निर्भय निडर और निश्शंक बना शेर नरेन्द्र मोदी, उस शेर की दशों दिशाओं में गूंजती दहाड़ सर्जिकल स्ट्राइक और डरा हुआ बकरियों का झुंड पाकिस्तान है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।